सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फ़ोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12è-
वार्षिक	रु0 120è-
विशेष वार्षिक	रु0 500è-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अगस्त, 2009 वर्ष 8 अंक 6

मदरसे के उस्ताद की
नसीहत

माँ बाप की ख़िदमत तुम करना
और भाई बहन से ना लड़ना

है हक़ पड़ोसी का तुम पर
तुम उस को ईज़ा मत देना

उत्पीड़ित और दुख मारों की
तुम कमी मदद में ना करना

और वक़्त पड़े जब लोगो पर
तो उनके लिये तुम मर मिटना

है बड़ी इबादत ख़िदमत भी
तुम इस में आलस मत करना

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

स्वतंत्रता दिवस	डा0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	3
क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	6
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	9
हमारे नबी	साबिर शोलापूरी	9
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सैय्यद अबुल हसन अली हसनी	10
जग नायक	मौ0 स0 म0 राबे हसनी	12
रिसालत व नुबुव्वत की जरुरत	मौ0 मुजीबुल्लाह नदवी	15
हमारे इरादे	इदारा	17
माता पिता	इदारा	18
हम कैसे पढ़ायें	डॉ. सलामत उल्लाह	20
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मो0 ज़फर आलम नदवी	22
नवाबी अवध	शमीम इक्बाल खाँ	24
असली जीवन आख़िरत	अयाज अहमद फारूकी	26
बच्चों का पालन पोषण कैसे	नजमुस्साकिब अब्बासी गाजीपुरी	27
इस्लाम आतंक नहीं अनुसरणीय जीवन आदर्श	स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य	28
आई0ए0एस0 में मुस्लिम नुमाइंदगी	एम0 हसन	30
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	32
पति पत्नी के पारस्परिक कर्तव्य	अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी	35
अल–बैरूनी	मुहम्मद इलियास	37
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ	40

स्वतंत्रता दिवस

डा0 हारून रशीद सिद्दीकी

कल ही से मेरा पौत्र बड़े ही तत्वावधान (एहतिमाम) से तिरंगे की तय्यारी में लगा है। मैं ने उस से कोई बात नहीं की परन्तु देखता ध्यान से रहा, स्टेशनरी शाप से झण्डे के लिये उचित काग़ज लाना, फिर उचित साइज़ से कटिंग करना फिर बड़ी व्यवस्ता (इन्हिमाक) से इस प्रकार रंगना जैसे तीन रंगों से मुद्रित (प्रिन्ट) हो रंगों के बीच ह्वाइट कलर में स्वतंत्रता दिवस स्पष्ट अक्षरों में लिखना उसी के मध्य में बड़ी सावधानी से अशोक चक्र बनाना फिर बड़ी चतुराई से उस के एक ओर डन्डी फिट करना यह सब देख कर मेरा मन प्रफुल्लित हो गया कि मेरा यह छोटा सा पौत्र तो आर्टिस्ट भी है और डिज़ाइनिस्ट भी। अब मुझ से रहा न गया मैं ने प्रश्न कर ही लिया बेटे! क्या बना डाला? उस ने विजयी शैली में झण्डा ऊंचा किया और बड़े गर्व से बोला : ये है तिरंगा मेरा प्यारा, राष्ट्र चिन्ह है यही हमारा। मैं ने कहा शाबाश! परन्तु यह राष्ट्र चिन्ह आज ही क्यों बड़ी व्यवस्ता से सजाया गया? कहने लगा दादा जी क्या आप नहीं जानते कि आज स्वतंत्रता दिवस है? आज हम यह झण्डा ले कर जुलूस निकालेंगे भारत माता जिन्दा बाद राष्ट्र हमारा स्वतंत्र रहे, देश हमारा फले बढ़े, दिवस स्वतंत्र अमर रहे, इन्किलाब जिन्दाबाद, यौमे आज़ादी जिन्दाबाद के नारे लगाएं गे। हमारा जुलूस निर्धारित मार्गे पर घूमे गा फिर स्कूल में एकत्र होकर स्वतंत्रता दिवस समारोह होगा, विद्यार्थी जन कविता सुनाएं गे। गुरूजनो के भाषण होंगे लड्डू बटेगे बड़ा ही मनोरंजक दिन बीते गा आज।

प्रिय पौत्र के इस भाषण ने पुनः प्रफुल्लित तथा आनन्दित किया, मैंने पूछा बेटे जानते भी हो कि यह दिन कब से और क्यों मनाया जाता है? वह बोला दादा जी यह दिवस तो पिछले वर्ष भी मनाया गया था और गुरूजनों ने कुछ इस विषय पर भाषण भी दिया था परन्तु एक तो मैं भली भांति समझ न सका था दूसरे मुझे लड्डू खाने के सिवा कुछ याद भी न रहा। मैं ने पूछा बेटे क्या तुम इस विषय पर कुछ जानना चाहते हो? वह बोला, अवश्य मैंने कहा अच्छा इस समय तो स्कूल जाओ और प्रोग्राम अटेन्ड करो सांझ को सोने से पहले घर के सभी जनों को बिठा कर इस विषय पर प्रकाश डालूगा।

सांझ को पौत्र जी ने स्वयं बड़ी अभिरुचि से बड़े कमरे में घर वालों को एकत्र किया सब से कह रखा था कि आज दादा जी स्वतंत्रता दिवस के विषय पर बोलेंगे जब सब लोग एकत्र हो गये तो पौत्र जी मुझे बुला ले गये और मैंने बात आरंभ की।

प्रिय परिवार जनो! हमारा यह भारत देश अपनी उपजाऊ धरती, अपनी नदियों, सुन्दर पर्वतों अपने खनिज पदार्थों अपने हरे भरे क्षेत्रों अपने जलवायु तथा अपनी सभ्यता एवं नैतिक स्वभाव के लिये सदैव से प्रसिद्ध रहा है। यहां के प्राचीन निवासी कोल भील द्रावण आदि थे, फिर मंगोलिया की ओर से अपने पशुओं सहित आर्य लोग आए उन को भारत ऐसा भाया कि वह यहीं के हो रहे अपितु अपनी बुद्धि तथा बल से यहां छा गये और बहुत समय बीतने पर लोग इन का बाहर से आना भूल गये, परन्तु प्राचीन निवासियों ने अपने साथ बरते गये बरताव से उन को अत्याचारी अवश्य जाना फिर यह आर्य लोग अपनी बुद्धिमानी से यहां के प्राचीन निवासियों को धर्म द्वारा यह समझाने में सफल हो गये कि तुम्हारा जन्म ही हमारी सेवा के लिये हुआ है।

जब अरब देश में इस्लाम का उदय हुआ तो उस ने पूरे विश्व को अपनी मानव उद्धार तथा मानवता प्रेम शिक्षा से प्रभावित किया भारत भी उस से वंचित नहीं रहा व्यापारियों का आना जाना तो पहले से था अतः जब व्यापरियों तथा

मुस्लिम सन्तों (सूफियों) द्वारा इस्लाम भारत में प्रविष्ट हुआ, और भारतियों ने उन मुस्लिम सूफ़ियों तथा व्यापारियों के जीवन को देखा तो उन से प्रेम हो गया और कितनों ने इस सत्य धर्म का स्वतः स्वागत किया, इस प्रकार यहां इस्लाम फैलना आरम्भ हुआ फिर यहां फैलता ही चला गया।

ततपश्चात कुछ घटनाएं ऐसी घटीं कि बाहर के कुछ मुस्लिम शासकों ने भारत पर आक्रमण कर दिया महमूद गज़नवी ने तो भारत पर सत्तरह आक्रमण किये परन्तु हर बार यहां से धन लूट कर लौट गया। महमूद ने यह आक्रमण क्यों किये इस सगय इस को न बयान करूंगा कि इस सभय तो मुझे स्वतंत्रता दिवस समझाना है। फिर कुछ घटनाएं ऐसी घटीं कि मुहम्मद ग़ोरी ने आक्रमण किया और जब उसे सफलता मिली तो उसने यहां राज्य स्थापित कर दिया और 1290 ई0 में अपने ग़ुलाम कुत्बुद्दीन ऐबक को दिल्ली की गद्दी पर बिठा दिया यह भारतीयों हेतु एक प्राकृतिक पाठ था कि यह तो अपने सेवकों को शूद्र कहें उन को अपवित्र जाने जब कि मुसलमान अपने दास को राजगद्दी दें। उस समय से भारत पर मुसलमान का शासन आरंभ हुआ जो लगभग पांच सौ वर्ष चला।

याद रहे कि इन आक्रमण कारियों ने तो भारत पर व्यवस्थित शासन स्थापित किया और इन के साथ जो बड़ी संख्या में मुसलमान आए वह यहां के निवासी बन गये जो इन के सैनिक और उनके परिवार थे, या इन की सेना के सपलायर थे सेना को बड़ी मात्रा में तेल सपलाई करने वाले तेली कहलाए प्रत्यक्ष है सेना को भारी मात्रा में तेल से कहीं अधिक मांस (गोश्त) की आवश्यकता थी और मुसलमान जो केवल हलाल गोश्त खाने वाले थे वह ग़ैर मुस्लिमों से न तो उस समय गोश्त ले सकते थे न आज लेते हैं न भविष्य मं लेंगे अतः उन की सेना के लिये तथा यहां पहुंचे दूसरे मुसलमानों के लिये गोश्त सपलायर आए जो क़साई कहलाए इसी प्रकार मुस्लिम धोबी, नाई, बुनकर धुन्ये आदि सब बाहारी हैं इन में कोई ग़ज़नवी है कोई ग़ौरी है, कोई ईरानी है कोई इराक़ी है तो कोई ख़ुरासानी है मगर यह बेचारे भारत की परम्परा में फंस कर अपनी अस्ल को भूल कर समाज सेवक कहलाए और यहां के आर्य समाज सेवको की भांति नीच समझे जाने लगे वरना इस्लाम में ऊंच नीच कहां परन्तु इस भेद को कम ही लोग जान रहे है। जो भी हो मुसलमानों ने यहां पांच सौ वर्ष बड़ी शान के साथ राज्य किया।

यहां एक भेद और खोलता हूं कि यह बिल्कुल ग़लत है कि यहां मुस्लिम शासकों ने बलात इस्लाम फैलाया वह बेचारे इस्लाम क्या फैलाते वह तो सत्ता तथा धन के भूखे सत्ता में मस्त ख़ुद ही इस्लाम भूले हुए थे, उनके जावनों में नाम मात्र ही इस्लाम था इस्लाम तो भारत में केवल मुस्लिम सूफ़ियों, आलिमों तथा व्यापारियों द्वारा फैला, फिर बल से इस्लाम फैल कब सकता है इसलाम तो मन के झुकने का नाम है, बल से सर तो झुक सकता है मन नहीं झुक सकता, हां यह सत्य है जहां मुस्लिम सूफ़ियों के नैतिक व्यवहार से यहां के लोग इस्लाम पर टूट पड़े यहां तक कि यहां कितने राजा, महाराजा ने इस्लाम को गले लगाया वहीं कुछ मुस्लिम शासक भी उन सूफियों से प्रभावित हो कर अपना जीवन इस्लामी बना लिया वरना भारत के अधिकांश मुस्लिम शासक चूंकि इस्लामी परिवार से थे अतः वह इस्लाम से तो न निकले और मुस्लिम कहलाए वरना वह स्वयं इस्लामिक शिक्षा के मुहताज (आश्रित) रहे, तो फिर वह दूसरो को इस्लाम की दअवत क्या देते। हां यह बात ज़रूर रही कि इन मुस्लिम शासकों ने यहां की जन्ता को वह न्याय तथा हिन्दु शासकों के मुकाबले में व्यक्तिगति स्वतंत्रता तथा समानता प्रदान की कि उन्हों ने धर्म मतभेद को भुला कर उन को अपना हितैषी समझा।

मुग़ल काल के मध्य में जैसे यहां पहले आर्य लोगा, पड़ी ज़मीन पर खेती करने तथा चरभूमि (चरागाह) से लाभान्वित होने के लिये आए तो देश वासियों ने उनका स्वागत किया, फिर मुस्लिम ताजिर व्यापार करने या मुस्लिम सूफी इस्लामी विश्वास तथा व्यवहार (अखलाक) का परिचय देने भारत

में प्रविष्ट हुए तो भारत वासियों ने उन का भी हार्दिक स्वागत किया इसी प्रकार पुर्तगाली तथा अंग्रेज यहां व्यापारी बन कर प्रविष्ट हुए तो मुस्लिम शासको ने जनता का हिति समझते हुए उनको अनुमति दे दी।

परन्तु अंग्रेज सदा से षड़यंत्री रहे हैं इन्हों ने व्यापार द्वारा शक्ति बढ़ाते हुए राज विरोध में चुपके चुपके षड़यत्र रचते हुए यहां के शासक बन बैठे, परन्तु यह शासक आर्य शासकों तथा मुस्लिम शासकों से भिन्न थे। इनका काम यहां की जन्ता को परस्पर लड़ा कर शासन को जमाए रखना था। (DEVIDE AND RULE) का नियम अपनाते हुए यहां कि जनता का शोषण (इस्तिहसाल) करना तथा यहां का धन खींच खींच कर अपने देश ले जाना था यह परिस्थति भारत के बुद्धि जीवियों के लिये बड़ी कष्ट दायक थी। इस के साथ तमाम सरकारी पदों पर इक्का दुक्का छोड़ कर अग्रेंज ही नियुक्त होते थे।

भारतियों को केवल चपरासी चौकीदार जैसी नौकरियां मिलती थीं विश्व युद्ध में ब्रटिश राज्य की ओर से प्राण अर्पण के लिये सेनानी की भरती में जाना पड़ता था। यह बात अब हर भारती को अनुभूत होती थी कि भारत में अंग्रेज को राज्य करने का अधिकार नहीं है और अंग्रेज भारतीयों पर अत्याचार कर रहे हैं। परन्तु उन से छुटकारे की बात हर एक की समझ से बाहर थी यह लावा भीतर भीतर पकता रहा। जो सन् 1857 में विद्रोह के रूप में फूट पड़ा। यह विद्रोह सेना से आरम्भ हुआ था जिन के पास लड़ने के हथियार थे। लगता था कि बस अब अंग्रेजों का सफाया हुआ बहुत से अंग्रेज मारे गये। परन्तु कुछ गलतियों के कारण विद्रोह को सफलता ना मिली अंग्रेजों ने विद्रोह पर नियंत्रण पा लिया और विद्रोहियों और उन के सहयोगियों का बध आरंभ हुआ तो लाखों आदमी मार दिये गये, इन मारे जाने वालों में 95 प्रतिशत मुसलमान थे, एक तो विद्रोह में मुसलमानों ही ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया था दूसरे चूंकि अंग्रेजो ने राज मुसलमानों ही से लिया था इस लिये उन को शंका हुई कि कहीं यह फिर सत्ता में न आ जाएं अतः इन ही की शक्ति ठीक से तोड़ दो।

विद्रोह के समय यहां अंग्रेजी कम्पनी राज्य करती थी विद्रोह के पश्चात नियमित रुप से भारत को ब्रटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। परन्तु भारतीयों के मन से स्वतंत्रता की भावना न मिट सकी। ख़िलाफ़त संग्राम इसी की एक कड़ी थी कांग्रेस पार्टी बनी जिस में स्वतंत्रता अभियान चलाने वाले हिन्दू, मुस्लिम, सिख सभी शामिल थे मार खाया, जेल गये परन्तु स्वतत्रंता के लक्ष से पीछे न हटे, अ़ली ब्रादरान फिर अबुल कलाम आज़ाद ह़सरत मोहानी, हुसैन अह़मद मदनी, ह़िफ़ज़ुरहमान स्योहारवी जैसे सैकड़ों मुस्लिम लीडर तथा जवाहर लाल नेहरू महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री जैसे सैकड़ों हिन्दू लीडर सब एक जुट होकर कष्ट पर कष्ट सहे, बार बार जेल गये परन्तु अपने लक्ष पर डटे रहे। अन्ततः विश्व स्तर पर जब ब्रिटिश राज्य को अनुमान हो गया कि भारत छोड़ना होगा और भारत को स्वतंत्रता देना होगी तो जाते जाते उसने एक चाल चली मुस्लिम लीग पार्टी द्वारा पाकिस्तान की मांग करवाई और अंग्रेजों ने इसे स्वीकृति दी इस प्रकार 14 अगस्त को देश विभाजित हो गया। पाकिस्तान के दो भाग कर दिये गये एक पूर्वी पाकिस्तान जो ततपश्चात बंगलादेश बना दूसरे पश्चिमी पाकिस्तान।14,15 अगस्त की बीच की रात में अंग्रेजों ने भारत छोड़ दिया और 15 अगस्त की सुब्ह को देश स्वतंत्र हो गया । पूरे देश में स्वतंत्रता की खुशया मनाई गई तब से अब तक 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर्व मनाया जाता है यह है हमारे स्वतंत्रता दिवस की संक्षिप्त कहानी और मैं ने तो दोनों काल देखे हैं वह काल भी जब अंग्रेज़ों का राज्य था और यह काल भी जिस में अपना राज्य है और यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि स्वतंत्रता के पश्चात हम ने हर लाइन में बड़ी उन्नति की परन्तु अंग्रेज़ो जैसा व्यवस्थित राज्य स्थापित करने में असमर्थ्य रहे यह कमी हम को दूर करना है और उन से अधिक व्यवस्थित राज चलाना है।

❑❑

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मु0 मंजूर नोमानी

सूद खाने की बुराई

तर्जमा : ऐ ईमान वालो! तुम एक दूसरे के माल आपस में नाजाइज तरीकों से हजम न करो। हां इस में कोई हरज् नहीं कि परस्पर रजा मन्दी से तुम्हारे दरमियान जाइज तिजारती लेन–देन हो।

(अन्निसा : 29)

इन दोनों आयतों में नाजाइज कमाई की मुमानिअत के लिये ऐसा वसीअ (व्यापक) और आम उन्वान इख्तियार किया गया है, जिस में कमाई के सारे ही नाजाइज तरीके आ जाते है। इस तरह इन आयतों से सूद (ब्याज), रिश्वत, जुवा, सट्टा लाटरी, धोका, फरेब की तिजारत (व्यापार) और इन के अलावा भी कमाई के सारे तरीके चाहे वे पुराने हों या नये; इन आयतों की रू से ममनूअ और हराम हो गये।

फिर सूद और जुए वगैरह के हराम होने को जगह–जगह अलग से भी बयान फर्माया गया है। जैसे, सूरए–बकरह के अडतीसवें (38) रूकूअ में सूदखोरों की बुराई और उन के बुरे अन्जाम के जिक्र के साथ "हर्रम रिंबा" के साफ–सपष्ट शब्दों में सूद के हराम होने का एलान फर्माया गया है। फिर "यम्हकुल्लाहु रिंबा" के शब्दों से सूद की नुहूसत और अल्लाह तआला की निगाह में उस की मग़जूबियत (ग़ज़ब नाज़िल होने योग्य) व मलअूनियत (धिक्कारने योग्य) को और जियादा स्पष्ट किया गया है। फिर जो लोग ये सब कुछ सुनने के बाद भी सूदी व्यवहार न छोड़ें, उन को संबोधित कर के सुनाया गया।

"फअज़नू बिहर्बि म्मिनल्लाहि व रसूलिही"

अनुवाद : तो सुन लो (एअलान) लड़ाई का अल्ला की ओर से तथा उसके रसूल की ओर से।

(अल बकरह : 279)

यानी तुम्हें अब खबरदार रहना चाहिये कि तुम से अल्लाह व रसूल की जंग है। तुम अब अल्लाह व रसूल के दुश्मन हो और अल्लाह व रसूल तुम्हारे दुश्मन हैं। (नअूजु बिल्लाहि सुम्म नअूजु बिल्लाहि, सुम्म नअूजुबिल्लाह)

कमाई और खाने–पीने ही के सिल्सिले में शराब और जुआ वगैरा जो चन्द नापाकियां अरब लोगों की ज़िन्दगी की मानो एक भाग बनी हुयी थीं, उन के बारे में सूरए–मॉइदह में इर्शाद फर्माया गया है :–

तर्जमा : ऐ ईमान वाले! यह शराब और जुए बाजी और यह देवस्थान (यानी झूठे – खुदाओं के आस्ताने – चौखट – और उन के चाढ़वे) और यह पांसे (यानी पांसों के जरीए कुरआ अंदाजी, जो जूये ही की एक खास शक्ल है) यह सब गन्दे नापाक शैतानी काम है, इन से बचो, तो तुम्हारी फलाह (कामयाबी) की उम्मीद हो सकती है।

(अलमाइदह : 90)

नाप–तौल में कमी–बेशी जो बहुत पुरानी और एक सर्व–साधारण बददियानती है, इस के बारे में कुर्आने–मजीद में फर्माया गया है:–

तर्जमा : और जब तुम्हें कोई चीज़ किसी को नाप कर देनी हो तो पैमाना (माप) पूरा भर कर दो, और (जब किसी को तौल कर कुछ देना हो, तो) ठीक तराजू से तौलो (बाट तराजू में कोई फेर और पेंच न हो)।

(बनी इस्राईल : 35)

तर्जमा : और हक व इन्साफ के मुताबिक ठीक तौलो, और वजन में कमी न करो (डन्डी न मारो)।

(अर्रहमान : 9)

कुर्आने–मजीद ने इन साफ और स्पष्ट हुक्मों के अलावा नाप–तौल में बद दियानती करने वालों को कियामत के अजाब से ऐस अन्दाज में डराया है कि जिस

दिल में खुदा का खौफ और डर की कुछ भी गुन्जाइश हो वह डर के रह जाये और फिर कभी भूल के भी उस से यह बद दियानती न हो पाये। इर्शाद फर्माया गया :–

तर्जमा : बड़ी खराबी और बहुत बुरा अन्जाम है नाप–तौल में बद दियानती करने वालों के लिये (जिन का तर्जे अमल यह है कि) जब लोगों से वे अपने लिये नाप कर लेते हैं तो भरपूर लेते हैं, और जब दूसरों के लिये वे कोई चीज नापते या तौलते हैं तो कम देते हैं। क्या उन्हें इस का खयाल नहीं है कि वे (मरने के बाद हिसाब और जजा के) महान दिन के लिये फिर जिन्दा करके उठाये जायेगें, जिस दिन कि सारे इन्सान जलाल व जबरूत वाले रब्बुल आलमीन के हुजूर (दरबार) में खड़े होंगे।

(ततफीफ)

जो शख़्स सच्चे दिल से कुरआने मजीद को खुदा की किताब माने वह इन आयतों को सुनने के बाद नाप तोल में बेईमानी व बद दियानती किस तरह कर सकता है। अगर ईमान का दावा करने वालों में भी ऐसे लोग कहीं नजर आते हैं तो समझना चाहिये कि उन के दिल ईमान की हकीकत से महरूम (वंचित) हैं।

हराम खोरी की एक बहुत ही लानती (धिक्कारित) शक्ल यह है कि कोई शख़्स मजहबी (धार्मिक) व रूहानी पेशवाई (धर्म गुरू) का लिबास पहन कर यानी आलिमे–दीन या दर्वेश (ऋषि) बन कर बहानों और हथकंडों से खुदा के सादा–दिल बन्दों से नजराने चढ़ावे वसूल करे। ऐसे लोगो का आम तरीका यह होता है कि भेंट और चढ़ावों को वसूल करने की इस प्रथा को हमेशा बाकी रखने और अपनी आने वाली नस्लों के लिये भी सुरक्षित करने के लिये वे इस की पूरी कोशिश करते हैं कि उन के जाल में फसने वाले ये सीधे–साधे लोग दीन (धर्म) की सही जानकारी प्राप्त न कर पायें और ये सादा–दिल बन्दे, अल्लाह के मुख़लिस बन्दों और दीन के सच्चे सेवकों और दाओयों (प्रचारकों) से सदैव दूर–दूर और अलग–अलग रहें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में ऐसे लोग जियादातर यहूदियों में थे। लेकिन हमारे इस जमाने में बदकिस्मती से खुद मुसलमानों में ऐसे पेशावर (व्यवसायिक) मौलवियों और पीरों का एक पूरा तबका मौजूद है जिस का यही काम और कारोबार है। बहरहाल ऐसे लोग चाहे वे यहूदियों ईसाईयों में हों या मुसलमानों में कुरआने–मजीद में उन के बारे में फर्माया गया है :–

तर्जमा : ऐ ईमान वालो! बहुत से ''आलिम मौलवी'' और पीर–फकीर'' खुदा के बन्दों का माल नाजाइज बहानों और तर्कीबों से खाते हैं (और उन बेचारों को दीनी फाइदा पहुंचाने, और खुदा का रास्ता बताने के बजाय, उलटे उन को) अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं।

(तोबा : 34)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में यहूद के मजहबी पेशवावों (धर्म–गुरूवों) का एक वर्ग था जो पहली आसमानी किताबों (तौरात वगैरा) की ऐसी बातो से अच्छी तरह जानकारी रखता था जिन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबुव्वत व रिसालत और आप (स0) के लाये हुये दीन (धर्म) व शरीअत (तरीका) की तसदीक (पुष्टि) होती थी लेकिन वह तबका अपने अवाम के सामने इस हकीकत को जाहिर नहीं करता था बल्कि ''तहरीफ व तावील'' (हेर'फेर) के पर्दे डाल कर उस को छुपाना चाहता था ताकि बेचारे आम लोग उसी तरह उन के जाल में फँसें रहें और नजरानों, चढ़ावों (भेंट) के सिल्सिले में कोई फर्क न पड़े। कुर्आने–मजीद में सूरए–बक्रह् में उन लोगों को सख्त वअीद सुनायी गयी है। फर्माया गया :–

तर्जमा : अल्लाह तआला ने जो किताबें नाजिल कीं, जो लोग उन के मजामीन (विषयों) को लोगों से छुपाते हैं और इस हक छुपाने के जरीये थोड़े से पैसे (नजराने, चढ़ावे,

भेंट के रूप में) हासिल करते हैं वे अपने पेट सिर्फ आग से भर रहे हैं (वे लोगों को धोका देने के लिये यहां खुदा–रसीदा और अल्लाह वाले बने हुये हैं, लेकिन हकीकत यह है कि अल्लाह तआला उन बहरूपियों से सख्त नाराज और बेजार है।) कियामत के दिन अल्लाह तआला से बात भी नहीं करेगा ओर उन को (बख्श कर) गुनाहों से पाक भी नहीं करेगा और उन के लिये वहां सिर्फ दर्दनाक अजाब है। (अलबकरह : 174)

कुरआने–मजीद ने एक तरफ तो कमाई के नाजाइज तरीकों और हराम गिजाओं (आहारों) को मना कर दिया और उन पर सख्त वअीदें सुनाई और दूसरी तरफ इस की भी तर्गीब दी कि अल्लाल तआला ने जिन चीजों और जिन कमाइयों को हलाल व तय्यिब (पाक) करार दिया है। (जिन का दाइरा बहुत फैला हुआ है) उन को अल्लाह की नेमत समझ कर उस के हुक्म के मुताबिक आजादी से इस्तेमाल किया जाये और उस का शुक्र अदा किया जाये, अपने को बिलावजह तंगी में न डाला जाये।

सूरए–बक्रह में इर्शाद फार्माया गया :–

तर्जमा : ऐ ईमान वालो! हम ने जो पाक तय्यिब चीजें तुम्हें बखशी हैं उन को बेतकल्लुफ खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ उसी की बन्दगी करने वाले हो (तो तुम्हारा तर्जे–अमल यही होना चाहिये।)

(अलबकरह : 172)

तर्जमा : अल्लाह तआला ने जो हलाल व तय्यिब चीजें तुम को अता फर्मायी हैं उन को बेतकल्लुफ खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र अदा करो, अगर तुम सिर्फ उसी की इबादत करते हो तो तुम्हें ऐसा ही करना चाहिये।

(अन्नहल : 114)

और सूरए–मॉइदह में इर्शाद फर्माया गया :–

तर्जमा : ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला ने जो पाकीजा चीजें तुम्हारे लिये हलाल की हैं उन को अपने लिये हराम मत करो और अल्लाह की निर्धारित सीमा से आगे न बढ़ो, ऐसा करने वाले अल्लाह को सख्त ना पसंद हैं। और अल्लाह ने तो हलाल तय्यिब चीजें तुम्हें अता फर्मायी हैं उन को बेतकल्लुफ खाओ पियो और जिस अल्लाह पर तुम्हारा ईमान है उस से डरो (और उस के हुदूद (सीमाओं) व हुक्मों के पाबंद रहो)।

(अलमाइदह : 87,88)

❑❑

राबित-ए-आलमे इलामी

The World Muslim league

यह इदारा (संस्था) 1962 ई0 में मक्का मुकर्रमा में काईम हुआ। इस के जिम्मेदार (उत्तरदायी) को जनरल सिक्रेट्री कहते हैं। दुन्या में इस्लामी तअलीमात की नश्र व इशाअत (प्रकाशन तथा प्रसारण) मुसलमानों के बीच बाहमी इत्तिहाद (पारस्परिक एकता) और दीन के मुखतलिफ (विभिन्न) मैदानों में काम करने वाले मुस्लिम मुबल्लिगीन (धर्म प्रचारक) उलमा और लीडरों के बीच राबिता (सम्बन्ध) काइम करना जैसे अजीम मकासिद (महान उद्देश्य) के लिये इस इदारे (संस्था) का कियाम अमल में आया। इस के तासीसी अरकान (मौलिक सदस्य) में मुस्लिम मुल्क के अलावा मुस्लिम अकल्लीयती मुमालिक (अल्प संख्यक मुस्लिम देश) उलमा, मुफक्किरीन (विचारक) तथा माहिरीने तअलीम (शिक्षा विशेषज्ञ) शामिल हैं। राबिता की तरफ से मुखतलिफ जबानों (विभिन भाषाओं) दीनी किताबें भी प्रकाशित होती हैं, हफ्तावार और माहाना अख़बार व रसाइल (समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं) भी शयअ (प्रकाशित) होते हैं। इस के जेली शुअबे (उप विभाग) यह है :–

(1) इस्लामी फ़िक्ह एकेडमी।
(2) आलमी मजालिस बराए मसाजिद (3) इस्लामी तंजीमात कमेटी।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

अह्ले जहन्नम

हज़रत हारिस : (र0) बिन वहब से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है। क्या मैं तुमको दोजख वालों की खबर दूँ? उसमें सब सर्कश बखील और मुतकब्बिर हैं। (बुखारी–मुस्लिम)

अहले जहन्नम और अहले जन्नत

हज़रत अबू सअीद (र0) खुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जन्नत और दोजख में बहस हुई। दोजख ने कहा मुझमें सर्कश और मुतकब्बिर हैं। जन्नत ने कहा, मुझमें कमजोर और मसाकीन हैं। अल्लाह तआला ने दोनों के दर्मियान फैसला किया। फरमाया, जन्नत तू मेरी रहमत है। तेरे जरीये मैं जिस पर चाहूंगा रहम करूंगा। और दोजख से खिताब किया कि तू मेरा अजाब है। तेरे जरीये जिस पर चाहुगा अजाब करूंगा। और तुम दोनों का भरना मेरे जिम्मे है। (मुस्लिम)

तकब्बुर से टखने से नीचा पायजामा और उस पर वअीद

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, कियामत के दिन अल्लाह तआला उस पर नजर न फरमायेगा जो बड़ाई के खयाल सेपायजामा को लटका कर इतराता चलता है। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, कियामत के दिन अल्लाह तआला तीन आदमियों से न बात करेगा, न उनको पाक करेगा, न उनकी तरफ़ देखेगा। और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (1) बूढ़ा बदकार (2) झूठा बादशाह (3) गदाये मुतकब्बिर। (घमन्डी भिखारी)

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया कि अल्लाह अज्ज व जल्ल का इरशाद है कि इज्जत मेरी तहबन्द है और बड़ाई मेरी चादर है। जिसने इन दोनों में से किसी को खीचा उस पर मैं अजाब करूंगा। (मुस्लिम)

मुतकब्बिर इतराने वाला ज़मीन में धंस गया

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, एक आदमी अच्छे लिबास और सर में कंघी किये हुए इतराई हुई चाल से चल रहा था अैर यह अन्दाज उसको बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। उसको अल्लाह ने धंसा दिया। वह ज़मीन में कियामत के दिन तक धंसता रहेगा। (बुखारी–मुस्लिम)

मुतकब्बिर का हश्र सर्कशों के साथ होगा

हज़रत सलमः (र0) बिन अकवअ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, आदमी बराबर तकब्बुर करता रहता है, यहां तक कि सर्कशों में लिखा जाता है। पस उसको भी वही पहुंचता है जो उनको पहंचा। (तिर्मिजी)

❑❑

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

– साबिर शोला पूरी

नबी हमारे सब से उत्तम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम
रब ने अपने पास बुलाया साक्षात मिअ़राज कराया
दोज़ख़ और जन्नत दर्शाया पांच नमाज़ें पढ़ो बताया
वो तो हैं करूणां के उदगम सल्लल्लाहु अ़लैहि व स्ल्लम
एक प्याला दूध मंगा कर सुफ़्फ़े वालों को बुलवा कर
सभी पियें उन को फ़रमा कर शिकम सेर सब को पिलवा कर
चमत्कार दिखलाया अनुपम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम
नया जो मिम्बर नबी का आया था जो पुराना रो चिल्लाया
करों से अपने उसे चुपाया सिसक सिसक आपे में आया
पढ़िये साबिर अक्षर उत्तम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

किस्त : 16

कारवाने ज़िन्दगी

आत्म कथा

अध्याय चार

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

लाहौर की ऐतिहासिक यात्रा

मेरे मुमताज पास होने की खबर मेरी फूफी (पत्नी मौलाना सैयद तल्हा) ने लाहौर में सुनी तो मेरी माँ को लिखा कि अली को (इस कामयाबी और इनाम की खुशी में) लाहौर भेज दीजिये। माँ और भाई साहब ने मंजूरी दे दी। और मैं मई की किसी आखिरी तारीख या जून 1929 में अपने एक बुजुर्ग रिश्तेदार मोल्वी सैयद इब्रहीम नदवी एम. ए0 जो दारूल–तर्जमः हैदराबद में काम करते थे, के साथ लाहौर रवाना हुआ। लाहौर उस समय उपमहादीप का सबसे बड़ा सांसृतिक, साहित्यिक और मीडिया का केन्द्र था। उर्दू के दर्जनों अखबार व पत्रिकायें निकलती थीं। ''हुमायूं'' आदि प्रतिष्ठित पत्रिकायें भी निकलती थीं। सब से बढ़कर यह कि वह शायरे मशरिक हकीमुल इस्लाम डाक्टर मुहम्मद इकबाल का शहर था।

यह मेरा पहला दूर का सफर था, वह खुशी और खिल उठना अभी तक नहीं भूला जो रवानगी के दिन दिल में हिलोरें ले रहा था। यह यात्रा मेरे जीवन में एक मील के पत्थर की हैसियत रखती है। मौलाना सैयद तल्हा साहब ने मुझे हर तबके के अहले कमाल (विद्वानों) से मिलाया। उस समय मेरी उम्र 15,16 साल की थी, उन्होंने मुझे जहां अल्लामा इकबाल से मिलाया और लाहौर के विख्यात विद्वानों से मेरा परिचच कराया वहीं अपने जमाने के रूस्तम गामा पहलवान से भी मिलाया इसी सफर में पहली मर्तबः हफीज जालंधरी के साथ मजलिस और खाने में शिर्कत की, और उन्होने मेरी फरमाइश पर बाज नज्में सुनाईं। साहित्यिक लोगों में हाफिज़ महमूद खां शीरानी (वालिद अख्तर शीरानी और लेखक ''पंजाब में उर्दू'') अल्लामा ताजूरी नजीबा बादी, प्रोफेसर शादां बेलग्रामी, ख्वाजा दिल मुहम्मद प्रोफेसर अब्दुल बासित, ख्वाजा सलीम, अब्दुर्रहमान चुगताई, मीर सैयद मुमताज अली के नाम याद आते हैं।

उस समय लाहौर के अदबी हल्कों में ''गुले रआना'' का, जो कुछ साल पहले प्रकाशित हुई थी, बहुत चर्चा था अक्सर जगह मेरा परिचय लेकखक ''गुले रआना'' के बेटे की हैसियत से किया जाता था। और कहीं इन शब्दों में कि यह बच्चा बेतकल्लुफ अरबी लिखता बोलता है। अल्लामा इकबाल के यहां मुझे यह कहकर पेश किया गया कि यह लेखक ''गुले रआना'' के बेटे हैं और इन्होंने आप की बाज नज्मों का अरबी नस्र (गद्य) में तर्जमः किया है। मौलाना तल्हा साहब नये आने वाले रिश्तेदारों में मशहूर लोगो से मिलाने और ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थलों की सैर कराने में अत्यधिक उदार और तत्पर थे। इस के लिए प्रायः स्वयं समय निकालते और अपने वृहत्त ज्ञान से इस भ्रमण में चार चाँद लगा तेदे। मैंने इस सफर में उन की बदौलत जो कुछ सीखा और देखा उस से अपने पूरे जीवन में फायदा उठाया उनका एहसान कभी नहीं भूल सकता कि वही हज़रत मौलाना अहमद अली साहब से मुलाकात , परिचय और सम्बन्ध का साधन बने। और उन का स्नेह प्राप्त हुआ जिस की मेरे जीवन पर गहरी छाप है। और इस बुनियाद पर अगले साल उन से पढ़ने के लिये विशेष रूप से यात्रा की, और तअल्लुक दिन प्रतिदिन बढ़ता गया।

एक उचित सलाह

इस सफर में एक दिन मौलाना सैयद तल्हा साहब ने जो ओरियंटल कालेज, लाहौर में अरबी के उसताद थे, अपने कालेज के प्रिंसपल मोल्वी मुहम्मद शफी साहब से मुझ को मिलाया जिन को वह मिस्टर शफी कहते थे और बाद में वह खान

बहादुर प्रोफेसर डाकटर मोल्वी मुहम्मद शफी एम0ए0 केन्टबरी डी ओ एल के नाम और लकब (पदवी) से मशहूर हुए और पाकिस्तान बन जाने के बाद उन को सितार–ए–पाकिस्तान का सम्मान मिला। मोल्वी मुहम्मद शफी साहब उन विद्वानों में, जो ब्रिटेन से अरबी और इस्लामी ज्ञान पढ़कर आये थे, विशिष्ट स्थान रखते थे। उन की अरबी की योग्यता भी पुख्तः थी, कदाचित इस में उन की मकतब या मदरसः की तालीम को दख्ल हो। लेकिन कानून–व्यवस्था के बड़े पाबन्द, और अपनी मित्र मण्डली में किसी क़द्र खुश्क और खुर्रे मशहूर थे। फूफा साहब ने उन से कहा कि इस बच्चे के अरबी लेखों को देखिये, और इस की शिक्षा के बारे में सलाह दीजिये कि यह कौन सी लाइन इख्तियार करे। मोल्वी साहब ने कहा कि इस तरह नहीं, आज रात खाना आप साथ खायें। मैं इतमीनान से इन के लेख देखूंगा और राय दूंगा। लोगो को आश्चर्य हुआ कि मोल्वी साहब सामान्यतः ऐसा आचरण नहीं बरतते।

रात को उन के मकान पर हम लोग पहुंचे। उन्होंने दिलचस्पी के साथ मेरा लिखा हुआ पढ़ा। इसके बाद कहा कि मेरी राय यह है कि यह अरबी पढ़ें और इसी में तरक्की करें, सिर्फ जरुरत भर को फ्रेंच सीख लें कि इस में इस्लामियात का सब से बड़ा भण्डार है लेकिन मूलतः अरबी ही पढ़ने में समय लगायें। और इसी में कमाल पैदा करें। यह सलाह अधिकतर शिक्षा विदों और कालेजों, यूनीवर्सिटियों में पढ़ने पढ़ाने वालों की राय से अलग थी, जो मेरे लिये अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने और आई0सी0 एस0 के लिये तैयार होने की सलाह देते थे जिस की सारे हिन्दुस्तान में धाक बैठी हुई थी और सब से ज्यादा इस की मुलाजमत को सम्मान जनक और काबिले रश्क समझा जाता था। बाद में जब खुदा ने मुझे अपने इस इल्मी सफर (ज्ञानमची यात्रा) को जारी रखने और अरबी भाषा का होकर रहजाने की तौफीक अता की, और मैं पकिस्तान बनने के बाद पहली मर्तबः लाहौर गया तो मोल्वी साहब उस समय पंजाब यूनीवर्सिटी से रिटायर होकर उर्दू इनसाइकलोपीडिया आफ इस्लाम के काम के प्रभारी थे। मुझ से "नुजहतुल खवातिर" के सिलसिले में कभी कभी पत्र–व्यवहार हुआ था और वह सीरत सय्यिद अहमद शहीद के ज़रीअे मुझे जानते थे, मैं उन से खास तौर पर मिलने गया। वह पंजाब यूनीवर्सिटी लाइब्रेरी लाहौर के परिसर में इन साइक्लो पीडिया आफ इस्लाम के दफ्तर में मिले। मैंने उन से उस सलाह का जिक्र किया जिस को वह भूल चुके थे, स्वाभाविक रूप से वह खुश हुए और अल्हमदुलिल्लाह उन्हों ने अपनी सलाह के उचित होने को प्रमाणित किया। (जारी)

❑❑

बच्चों का पालन पोषण.....

सामूहिक परिवार में बच्चों को विश्वास करा सकते हैं कि अच्छे और बुरे मित्र की पहचान कया है? बड़ो का आदर बच्चों पर अनिवार्य होना चाहिये।

बच्चों को दूसरी शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा अवश्य दिजिये। उन्हें विधाता से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भक्ति की ओर आकृष्ठ किजिये और उन्हें बतलाइये कि समस्याओं के समाधान के लिए मालिक से प्रत्यागमन करें। इस प्रकार उन्हें जल्द ही अनुभव हो जायेगा कि ईश्वर उनका मित्र है जो सब से अधिक उन के समीप है। बुराइयों से केवल ईश्वर की ओर प्रत्यागमन करने ही से बचा जा सकता है। बच्चों को बताइये कि बुराइयों का परिणाम क्या होते हैं। अगर बच्चे ईश्वर के आदेशों के अनुरूप जीवन व्यातीत करेंगे तो उन्हें दोनों जीवनों में सफलता मिलेगी।

बच्चो को सदैव रहने वाले जीवन का ज्ञान देना अति आवश्यक है। आप का यह भी प्रयास हो कि वह अच्छे नगर निवासी बनें। अगर आप इन बातों पर ध्यान देंगे तो आप के बच्चे आदर्श बच्चे होगे।

❑❑

किस्त : 1

जागनायक

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु0 गुफरान नदवी

महान सुधारक (नबी) की जरुरत

अल्लाह तआला के इल्म में मानव संसार अब जिस[1] मरहले में दाखिला (प्रवेश) होने जा रहा था वह मरहला दुनिया के कोने कोने के एक दूसरे से करीब आजाने और वैज्ञानिक व व्यवहारिक अनुभवों से अधिक से अधिक लाभ उठाने का मरहला था, अतः उस आखिरी (अन्तिम) नबी को उन हालात व कैफियात के साथ मबऊस (अवतारित) फरमाया और उसको जो आसमानी किताब अता की वह उन पहलुओं की जामेअ रहनुमा (व्यापी मार्ग दर्शक) बनी और उस किताब की हिफाजत (रक्षा) की जिम्मेदारी खुद ली, ताकि इन्सानों के दुष्ट स्वभाव लोग उसमें कमी जियादती न कर सकें और नबी की नबूवत का सिलसिला जिस तरह कियामत तक हो उसी तरह उस किताब की सच्ची रहनुमाई भी कियामत तक हो और इन दोनों की सरपरस्ती से उम्मते मुस्लिमा के सामने राहे हिदायत (सत्य मार्ग) बिना किसी तबदीली (परिवर्तन) के चमकती रहे और जो वास्तव में हिदायत (सत्य मार्ग) का चाहने वाला हो वह हिदायत पा सके और जो गुमराही (पथ भ्रष्ठता) को अपनाए वह वास्तव में गुमराह (पथ भ्रष्ठ) हो।

अल्लाह तआला के निश्चित प्रबंध और ज्ञान में दुनिया का जो नया दौर (आधुनिक काल) प्रांरम होने वाला था उसके लिये भी अल्लाह तआला का यह फैसला हुआ कि इस आखिरी और अन्तरराष्टीय और कियामत तक रहने वाली नबुव्वत के हामिल (भारवाहक) नबी के जरीये शुरू हो और उसकी उम्मत अर्थात उसके अनुयाई उसको दुनिया में फैलाएं अतः उस नबी को दी गई किताब के जरिये और उस नबी की हिदायात (आदेशों) और स्वयं उसके व्यवहारिक जीवन द्वारा दुनिया का वह रूख (आकृति) बना, जिसकी बिना पर दुनिया की ज़िन्दगी में इल्म (ज्ञान) का चलन हुआ और आलमी बना, यह निजाम आलमी (विश्वव्यापी व्यवस्था) वह निजाम नहीं, जिसको दुनिया की स्वार्थी और मन मानी करने वाली ताकतों ने अपनी सत्ता को फैलाने के लिये आलमी निजाम (सांसारिक प्रबन्ध) का नाम दिया है, यह इस्लामी और नबवी निजाम (प्रबन्ध) था, जिसमें भलाई को फैलाना, और हर छोटे बड़े गरीब अमीर ताकतवर कमजोर बेसहारा सबको समान सुहूलत, समान अधिकार, जीवन के समान साधन प्रदान करने और सबको एक ही तरह एक अल्लाह का अज्ञाकारी बनाने का आलमी निजाम (सांसारिक प्रबंध) है जो सारे संसार के पालनहार अल्लाह की ओर से उसके समस्त बन्दों के लिये अपने अन्तिम नबी द्वारा प्रदान किया है। और इस आयते कुरआनी की तफसीर (व्याख्या) है कि (ऐ! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमने तुमको सारे जहानों के लिये रहमत ही बना कर भेजा और यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मत है और मैं तुम सब का रब हूँ लिहाजा मेरी ही इबादत करो।

अरब प्रायद्वीप का हाल "बेसते मुहममदी" के समय

बेसते मुहम्मदी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सन्देष्टा बनाया जाना) के समय दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के पूर्व वर्णित हालात और फिर अरब प्रायद्वीप के बासियों की अशिक्षित और असभ्य आबादी को जिस पथरीली और सूखी ज़मीन में ज़िन्दगी गुजारना पड़ रहा था

(1) हुज्जतुलल्लाहु बालिगा, प्रथम भाग

उनमें उस नए मबऊस होने वाले नबी को कितनी अहम (महत्तवपूर्ण) जिम्मेदारी पूरी करनी थी, यह एक बहुत साहसी और उच्च कोटि के आध्यात्मिक इन्सान का काम था, एक ओर अरब कौम को जो अनपढ़ और असभ्य होने के बिना पर अपनी बात पर अड़ने वाले और सख्ती से जमने वाले मिजाज के थे, जिन आदतों में वह पक्के हो गए थे उन आदतों से उनको छुड़ाना और उनका सुधार करना ऐसे उच्च स्थान पर पहुंचाना जहां से वह नेतृत्व के योग्य हो सकें, फिर उनके द्वारा दूसरी कौमों को सत्य मार्ग पर लाना, उनमें वह सभ्य कौमे भी थी जो अरबों को दीहाती और पिछड़ा वर्ग समझ कर उनका अपमान करती थीं और उनको निगाह में नहीं लाती थीं, इसी रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह मुहिम अन्जाम देनी थी। जो कि नाकाबिले तसव्वुर और अज़ीम तरीन काम था, इसके लिये अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिखाब फरमाया, फिर उनके काम के हर मरहले में अपनी हिदायात (आदेश) और रहनुमाई (मार्ग दर्शन) "वही" (इशवरीय वांग्मी) के जरिये फरमाई, अल्लाह रब्बुलआलमीन अकेला समस्त संसार का बनाने वाला और पूरी सृष्टि का रचयता है, वह भली भांति जानता है कि उसका कौन बन्दा क्या और किस सीमा तक अपनी जिम्मेदारी निभाएगा, अल्लाह तआला के यह इन्तिखाब किये हुवे (निर्वाचित) नबी अरब कौम के ही एक फर्द (व्यक्ति) थे, लेकिन अल्लाह तआला के बनाए हुवे और उसके निर्वाचित थे अल्लाह तआला फरमाता है :– कि अल्लाह तआला ही जानता है कि कहां वह अपनी पैगम्बरी के काम को रखे, बहरहाल उस महान नबी के कारनामे जानने से पहले उसकी कौम को और दुनिया के जिस भूखन्ड में वह कौम आबाद थी उसको समझ लिया जाए ताकि उसके काम की महत्तवता स्पष्ट हो सके।

अरब प्रायद्वीप में इन्सानी आबादी

अरब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम पर आए हुवे अजाब से बचे हुवे लोगों की औलाद दर औलाद में से थे और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बअद दुनिया में इन्सानी आबादी केवल उनकी उसी अजाब से सुरक्षित रहने वाली अवलाद से ही बनी थी, इतिहास से मअलूम होता है कि उनके बज़ाहिर तीन ऐसे बेटे थे जो आगे आने वाले इन्सानों के मूरिस (पूर्वज) हुवे, उनमें एक "साम" थे उनकी अवलाद आमतौर पर उस इलाके में जिसको मध्य पूर्व कहा जाता है, जिस में इराक, अरब द्वीप और मिस्र है फैली, दूसरे "हाम" थे उनकी अवलाद अफरीका और दूसरे दक्षिणी इलाकों में बसी, तीसरे "याफिस" थे उनकी औलदा दुनिया के उत्तरी पूर्वी इलाकों में बसी, साम की अवलाद में आराम हुवे, उनके कबीले (गोत्र) अरब के विभिन्न इलाकों में फैले और सारांश यह कि वह सब गुमहारियों (पथभ्रष्टता) में पड़ कर अपने नबीयों की बात न मानने पर समय समय पर अजाबों के आने से तबाह हुवे, उनके अलावा दूसरे कबीलों में एक कबीला "कहतान" था जो अरब द्वीप के दक्षिण यमन आदि में बसा, और उसकी एक शाख इराक में रही, "कहतान"की ही अवलाद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का खानदान हुवा और वह इराक ही में रहा और उनमें उनके सुधार के लिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम नबी मुकर्रर (नियुक्त) किये गए।[1]

हज़रत इब्राहीम और उनकी औलाद

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम की औलाद में "अरफरवशज" की नस्ल (वंश) से थे[2] वह इराक में कुलदानी खानदान के एक बड़े व्यक्ति के बेटे थे, यह एक खानदान (वंश) सितारह परस्त मुशरिक

(1) अल–कामिल फित–तारीख : 1/78
(2) अल–बिदायह वन निहायह : 1/139 अल–मुफस्सलफी तारीखिल अरब कबलल इस्लाम आम प्रथम–लेखक डा0 जव्वाद अली

खानदान था[1] बचपन में अपने खानदान और अहले वतन की बुत परस्ती और शिर्क उनको अजीब सा मअलूम हुवा कि यह लोग सितारों (नक्षत्रों) को खुदा समझकर उनकी अलामतें (चिन्ह) बुतों की सूरत में बनाकर इबादत (पूजा) करते है यह सितारे ऊपर सही लेकिन यह खुदा कैसे हो सकते हैं उन्होंने पहले सितारों पर गौर किया फिर चांद पर फिर सूरज पर और उनका दिल नहीं माना उन्हों ने खुदा को उससे ऊँचा महसूस किया और इसका ख्याल करके अपनी बरअत (निर्दोष) की दुआ की और दुआ कबूल हुई, और अल्लाह की बड़ाई फिर वहदानियत (एक मात्रता) उनके दिल में बैठ गई[1] फिर वह भी खुदा की तरफ से नबी मुनतखब (निर्वाचित) हुवे और उन्होंने बुतों को तोड़ डाला और अपनी कौम को तौहीद (एकश्वरवाद) की दअवत दी[3] इस पर कौम बहुत नाराज हुई और उनको आग में डाला, लेकिन अल्लाह ने उनको आग में जलने से महफूज (सुरक्षित) रखा, फिर वह वतन छोड़ कर शाम (सीरिया) के इलाके में आ गए और फिलिस्तीन में क़याम (स्थान) किया, उनके साथ उनके भतीजे लूत अलहिस्सलाम भी आए और उन्होंने अपने अपने इलाके में इस्लाह (सुधार) और अल्लाह की ओर बुलाने का काम किया।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एक बेटे इसहाक हुवे, उनके एक बेटे यअकूब अलैहिस्सलाम हुवे जिनका नाम इसराईल भी था, उनकी जो नस्ल (शाख) हुई वह पहले शाम (सीरिया) में फिर मिस्र में बसी, और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दूसरे बेटे इसमाईल हुवे जिनको उनके वालिद (पिता) हज़रत इब्राहीम ने अरब द्वीप के मध्य क्षेत्र के मक्का मुकर्रमह के बनजर इलाके में जहां न पानी न हरयाली, उनको माँ के साथ बल्कि बचपने की हालत में अपने रब के हुक्म (आदेश) पर लेजाकर ठहरादिया, वहां बअद में यमन के कबीले "क़हतान" की शाख कबीला "जरहम" भी आकर बस गई और बअद में हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का उनसे रिश्ता होने पर हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का खानदान बना, उस खानदान की शाखें नज्द व हिजाज़ वगैरह मे बसीं, उनमें हिजाज़ में ठहरने वालों के मूरिस (पूर्वज) मुज़र नामी शख़्स थे और उन्ही की औलाद में आगे चलकर कुरैश हुवे।

मक्का मुकर्रमह की आबादी (जनसंख्या) हज़रत इसमाईल से शुरु हुई थी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनको बचपन ही में मक्का के बेआब व गयाह (बिना पानी व हरयाली) मैदान में पैदा हुवे। उनकी माँ के साथ जाकर अल्लाह के हुक्म से ठहरा दिया था जो कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अज़ीम (महान) कुरबानी थी कि अपने दूध पीते बच्चे और उनकी माँ को ज़िन्दगी के किसी काबिले एतिबार (भरोसा योग्य) सहारे के बगैर मक्का जैसी बनजर बिना पानी और हरयाली आबादी से खाली जगह ठहराया और अपने मालिक का आज्ञा पालन बिना झिझक किया, यह जगह वह थी कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी यहां आचुके थे और यहां मसजिद की बुनयाद रखी थी जो बअद में मिट गई थी कुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तजकिरह (वर्णन) इस तरह आया है :– अनुवाद

"ऐ! हमारे पालनहार मैने अपनी कुछ औलाद (सन्तान) इस बेखेती की वादी (धाटी) में तेरे रहम व करम के घर के पास बसाई है, ऐ, हमारे पालनहार यह इस लिये कि वह नमाज़ कायम रखे, अतः तू कुछ लोगों के दिलों को झुका दे और उन्हें फलों और पैदावार की आजीविका (रोजी) प्रदान करे ताकि यह शुक्र गुजारी करें।"

(सूरह इब्राहीम 31)

❑❑

(1) अल–विदायह वन–निहायह : 1/140
(2) अल–बिदायह वन निहायह : 1/139 अल–मुफस्सलफी तारीखिल अरब कबलल इस्लाम आम प्रथम–लेखक डा0 जव्वाद अली
(3) अल–विदायहवन–निहायतन : 1/140

रिसालत व नुबुव्वत की ज़रूरत

मौ० मुजीबुल्लाह नदवी

अल्लाह तआला ने इन्सान को सिर्फ़ ज़िन्दगी ही नहीं बख़शी बल्कि उस के इस दुन्या में आने से पहले ही उस के लिये ज़िन्दगी का सारा सामान उपलब्ध कर दिया। उस को अपनी नश्व व नमा तथा पालन पोषण में जिन चीजों की ज़रूरत होती है, वह सब उस के अस्तित्व में आने से पहले विद्यमान होती हैं। एक बच्चा जब माँ के पेट में होता है उसी वक़्त से अल्लाह तआ़ला आश्चर्य जनक विधि से उस को जीवन प्राश्य उपलब्ध कराना आरम्भ कर देता है। फिर जब वह माँ के पेट से बाहर आता है तो उस से पहले ही माँ के सीने से दूध उपलब्ध होता है। इस संसार में आते ही उस को हवा मिलती है, रौशनी (प्रकाश) मिलती है पानी तथा दाना मिलता है, विस्तृत अंतरिक्ष (वसीअ़ फ़ज़ा) मिलता है, माँ की ममता तथा बाप का प्रेम मिलता है। रिश्तेदारों नातेदारों की करुणा तथा उन का प्रेम पाता है। इस प्रकार जूँ जूँ वह बढ़ता जाता है, उस की आवश्यकताएं उसके अनुसार उपलब्ध होती जाती हैं। फिर सोचने की बात है कि अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दगी को जो चीज़ें अपनी विशेष विधि (कुदरते ख़ास) से प्रदान की हैं उन में अमीर, ग़रीब, दीहाती, शहरी, किसान, ताजिर, शासक, प्रजा, राजा, रंक में कोई अंतर नहीं रखा, बल्कि सब को बराबर का भाग दिया है, हवा, पानी अमीर को जितना मिलता है, ग़रीब को भी उतना ही मिलता है। रोशनी (प्रकाश) तथा अंतरिक्ष का फैलाव जितना शहरी के लिये है उतना ही दीहाती के लिये भी, अनपढ़ के लिये भी और पढ़े लिखे के लिये भी यह अल्लाह तआ़ला की देन है जो सब के लिये बराबर है।

विरोधी हो उसका कि या भक्त हो
है भंडार उसका सभी के लिये।
ये पानी हवा और जमीं आसमाँ
बनाये गये आदमी के लिये।।

ध्यान देने की बात है कि क्या मानव जीवन को इतनी ही आवश्यकता है कि वह दुन्या की इन निअ़मतों से फ़ाइदा उठाए और जानवरों की भांति पेट पाल कर इस दुन्या से चला जाए या उसे इस का भी ज्ञान होना चाहिये कि यह सारी निअ़मतें किस ने दी हैं और स्वयं यह मनुष्य इस संसार में किस उद्देश्य से आया है और इस संसार में उस का स्थान क्या है? इस वास्तविकता को बताने वाले सदैव वही लोग रहे हैं जिन को हम नबी और रसूल कहते हैं। या उनके अनुयायी यह काम करते रहे हैं। इस विषय में शुद्ध बातें वही बता भी सकते हैं कारण यह कि यह बातें ऐसी नहीं हैं कि अ़क़्ल से सोच कर या मन से गढ़ कर बताई जा सकें इस को तो वही बता सकता है जिस ने इस संसार को रचा है और वह संसार का रचयता मानव जन्म के उद्देश्य की वास्तविकता अपने बन्दों को अपने नबियों तथा रसूलों द्वारा बताता है। चुनाचि नबियों तथा रसूलों ने बताया कि इन्सानों के लिये यह जो ज़मीन, आसमांन और इन में जो कुछ है सूरज, चान्द आदि इन सब के बनाने में एक ख़ालिक़ व मालिक का कोई साझीदार नहीं है। और उन्होंने बताया कि मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने विधाता के समक्ष कृतज्ञता प्रगट करे उस का शुक्रगुज़ार हो, और उस की वास्तविक शुक्रगुज़ारी (कृतज्ञता) यही है कि वह विधाता के आज्ञापालन में अपना जीवन बिताए। मनुष्य इस जगत में अपने विधाता का प्रतिनिधि है, अतः इस

संसार को सभी वस्तुओं का प्रयोग विधाता के नियमानुसार ही होना चाहिये।

यह भी सोचने की बात है कि मनुष्य केवल हाड़ मास का संग्रह नहीं है, उस के शरीर में एक धड़कता ह्रदय, चिन्तन करने वाला मस्तिष्क तथा स्पंदित प्राण भी हैं, ह्रदय तथा मस्तिष्क में भली भावनाएं उत्पन्न होती हैं, बुरी कल्पनाएं भी आती हैं और जिस प्रकार खाने पीने की असावधनी से शरीर को रोग लग जाता है इसी प्रकार कुकर्मो से ह्रदय तथा मस्तिष्क रोगी हो जाते हैं, क्रोध, ईर्षा, घमन्ड, लालच, सत्ता प्रियता, अति, यह सब प्राकृतिक मानवी स्वभाव हैं, इन पर नियंत्रण किस प्रकार हो? इन का प्रयोग किस प्रकार हो, इन के अशुद्ध प्रयोग के क्या परिणाम होते हैं यह तमाम बातें हम को इन के पैदा करने वाले ही से ज्ञात होंगी। और यह ज्ञान देने के लिये विधाता ने नबियों तथा रसूलों की शृखंला चलाई।

क्रोध बुरी वस्तु है परन्तु कभी क्रोध की आवश्यकता भी होती है, कहां इस की आवश्यकता है और कहां इस का प्रयोग लाभ दायक है और कहां यह न चाहिये और इस का प्रयोग हानिकारक होगा? इसी प्रकार सभी भलाइयां तथा बुराईयां और उनके वास्तविक परिणाम से अल्लाह के भेजे हुए नबी और रसूल ही बता सकते हैं मानव दृष्टि में बहुत सी वस्तुएं लाभ जनक दिखती हैं परन्तु अल्लाह का रसूल स0 उन को हानिप्रद बताता है उदाहरणर्थ एक शख़्स सूद लेतो है, जुआ खेलता है, लाट्री जीतता है उन चीजों में उस को माल मिलता दिखता है, लाभ नजर आता है परन्तु अल्लाह का रसूल बताता है कि मानवी समाज पर इस का बुरा प्रभाव पड़ता है और ह्रदय तथा प्राण में भी इन से विकार आता है यह आंतरिक विकार अल्लाह का रसूल ही बता सकता है इस लिये कि अल्लाह वह्य द्वारा उन को अवगत कराता है।

तातपर्य यह कि यदि अल्लाह नुबुव्वत व रिसालत का सिल्सिला न चलाता तो ना तो मनुष्य अपने पैदा करने वाले को पहचान सकता न उस के आदेशों को जान सकता न आने वाले जीवन के उद्देश्य से अवगत होता न भले बुरे में अंतर कर पाता, न एक दूसरे के हुकूक जान सकता यह अल्लाह का बड़ा एहसान और उस की बड़ी कृपा है कि उस ने नुबुव्वत व रिसालत का सिल्सिला जारी कर के हमारी समस्याओं का समाधान किया।

यही वह मानवी आवश्यकताएं थीं कि अल्लाह तआ़ला ने मनुष्यों को जीवन देने के साथ ही नुबुव्वत व रिसालत का प्रबन्ध भी कर दिया। हज़रत आदम सब से पहले मानव भी थे और सब से पहले नबी भी थे। उन के पश्चात उन की सन्तान खूब फली फूली उन में आवश्यकतानुसार नबी व रसूल भी भेजे जाते रहे। संसार के हर क्षेत्र में और हर काल में आवश्यकतानुसार अल्लाह तआला नबी व रसूल भेजता रहा और जब इन्सानों का नागरिक जीवन अपने अंतिम शिखर पर पहुंच गया तो अल्लाह तआ़ला ने अपने अंतिम नबी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को सम्पूर्ण दीन प्रदान कर के रिसालत व नुबुव्वत के सिल्सिले को समाप्त कर दिया और अब क़ियामत तक आप की लाई हुई शिक्षा ही पर अ़मल करना ज़रूरी कर दिया। आप की नुबुव्वत के पश्चात कोई दूसरी नुबुव्वत दुन्या में नहीं होगी। आप के पश्चात जिन लोगों ने नबी होने का दअ़्वा किया वह सब झूठे हैं जैसे मुसौलिका कज़्ज़ाब, अस्वद अ़नसी आदि और इस काल में ग़ुलाम अहमद क़ादियानी (अलबत्ता यह याद रहे कि क़ियामत के क़रीब ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से उतारे जाएंगे तो वह पहले से नबी हैं नये नहीं होंगे फिर भी वह अपनी शरीअ़त न चला कर अंतिम नबी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शरीअ़त का अनुकरण करेंगे और जीवन के अंत तक इसी का प्रचार करें गे।)

❑❑

हमारे इरादे

इदारा

ग़मगीन हैं हालात से मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं हम देश में महबूस नहीं हैं

हम देश की रखवाली में हरगिज़ नहीं पीछे
है कांपता दुशमन हमारी हांक के आगे

तलवार हो बन्दूक़ हो या बम का धमाका
हर हाल में पाओगे हमें आगे ही आगे

ग़मगीन हैं हालात से मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं हम देश में महबूस नहीं हैं

मैदान में दें पीठ ये सम्भव ही नहीं है
दुश्मन को अपना भेद दें सम्भव ये नहीं है

दुश्मन से साज़ बाज़ तबीअ़त नहीं अपनी
हम बाघ है सियार हों सम्भव ये नहीं है

ग़मगीन हैं हालात से मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं हम देश में महबूस नहीं हैं

फ़ितरत ने तिजारत का सिखाया है क़रीना
ताजिर की सदाक़त का दिखाएं गे नमूना

मैदाने तिजारत में कोशिश ये करें गे
हर मुल्क के साहिल पे हो भारत का सफ़ीना

ग़मगीन हैं हालात से मायूस नहीं है
आज़ाद हैं हम देश में महबूस नहीं हैं

मक़्सूद तिजारत से है मख़लूक की ख़िदमत
मक़्सूद फ़क़त नफ़्अ़ की तिजारत पे है लअ़नत

हम ख़िदमते मख़्लूक़ में कुछ रिज़्क़ भी लेंगे
और लेंगे तिजारत से ख़ैरो रहमतो बरकत

ग़मगीन है हालात से मायूस नहीं हैं
हम देश में आज़ाद है महबूस नहीं हैं

हैं खेत हमारे हम उस में काम करेंगे
हम सुब्ह वहां पहुंचे गे वहीं शाम करेंगे

घन्टों का तो पाबन्द है मज़्दूर फ़क़त आठ
और हम तो ज़रा रात में आराम करेंगे

ग़मगीन हैं हालात से मायूस नहीं हैं
आज़ाद है हम देश में महबूस नहीं हैं

तेकनिक नई खेती में हम आम करेंगे
आलाते जदीदा से हम काम करेंगे

ग़ल्ले की कमी मुल्क में होने नहीं देंगे
इस पेश–ए–आली को न बदनाम करेंगे

ग़मगीन हैं हालात से मायूस नहीं है
आज़ाद है हम देश में महबूस नहीं है

हक़ नौकरी का हम अदा करने में है मशहूर
हाकिम हों कि हारिस हों हर हाल में मसरूर

हम वक़्त के पाबन्द हैं मेहनत शिआर हैं
और काहिली सुस्ती से तो रहते हैं बहुत दूर

ग़मगीन है हालात से मायूस नहीं है
आज़ाद हैं हम देश में महबूस नहीं हैं

माता पिता (माँ-बाप)

अल्लाह ने आदेश दिया कि उस के अतिरिक्त किसी की भी उपासना मत करो, और अपने माँ बाप के साथ उत्तम व्यवहार करो, यदि उन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाए तो तुम (उन की सेवा को अप्रिय समझते हुए) कभी उंह भी न कहो ना ही कभी उन को झिड़को तथा उन से नम्रता से बात करो, और उन के आगे विनय पूर्वक अपनी बाहें झुकाए रखो और अपने स्वामी (रब) से कहो हे स्वामी, हे पालनहार जिस प्रकार मेरे बचपन में इन्होंने मुझे करुणा पूर्वक पाला पोसा है अब इस बुढ़ापे में तू भी इन पर दया कर (अर्थात बुढ़ापे के कष्ट से इन को बचा ले) तुम्हारा रब तुम्हारे दिलों की बातें जानता है (अतः अपने माँ बाप की सेवा दिल से करो) यदि आज्ञाकारी हो कर अपने माँ बाप की सेवा मन से करते हो तो यदि अनजाने कोई भूल चूक हो गई और उस पर तुम ने पश्चाताप (तौबा) किया, क्षमा याचना की (क्षमा माँगी) तो अल्लाह पश्चाताप करने वालों के लिये बड़ा दयालू है।

(देखें सूरे बनी इस्राईल आयतें 23,24,25)

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने मजीद में चार जगह अपनी तौहीदे उलूहियत के साथ वालिदैन के साथ एह़सान का ज़िक्र फ़रमाया है, फ़रमाया : मत उपासना करो किसी और की केवल मेरी उपासना करो और माँ बाप के साथ भला व्यवहार करो। एक जगह तो कहा मेरी शुक्र गुज़ारी करो और अपने माँ बाप की शुक्रगुज़ारी (कृतज्ञता) करो। माँ बाप का बड़ा दर्जा है अल्लाह तआ़ला ने बार बार उन के साथ भले व्यवहार का आदेश दिया है यहां तक कि अगर वह ईमान न लाए हों और वह तुम को शिर्क (अल्लाह के साथ साझी बनाने) की मांग करें तो तुम उन की बात न मानो परन्तु क्रोधित हो कर उनके साथ दुर्व्यवहार न करो उन को छोड़ भी न दो बल्कि "साहिब् हुमा फ़िद्दुन्या मअ़रूफ़ा" इस संसार में सांसारिक कार्यों में उनके साथ भलाई का व्यवहार करते रहो। यह बातें वह हैं जो क़ुर्आन शरीफ में स्पष्ट रूप से आई हैं, वरना विस्तार से लिखा जाए तो केवल क़ुर्आने मजीद की आयतों के प्रकाश में माँ बाप के साथ भले बरताव के सम्बन्ध में एक किताब लिखी जा सकती है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीसों में तो माँ बाप के साथ भले बरताव पर बहुत ज़ियादा बयान आया है हम यहाँ केवल दो ह़दीसे बयान करके नवयुवकों से अनुरोध करेंगे कि यदि वह आख़िरत के जीवन पर ईमान रखते हैं तो वह माँ बाप की ह़क़तल्फ़ी करके और उन की सेवा में कोताही कर के अपने सदैव के जीवन को नष्ट न करें।

इब्नि माजा और मुस्नद इमाम अह़मद बिन ह़ंबल में एक ह़दीस है कि "अन्त व मालुक लि अबीक" तू और तेरा माल तेरे बाप का है। अर्थात तेरा बाप अगर तुझे गुनाह के अतिरिक्त जिस बात का आदेश दे तुझ को चाहिये कि तू उसे बजा लाए इस लिये कि तू अपने बाप के लिये है। बस यह याद रहे कि गुनाह में किसी की पैरवी नहीं। इसी प्रकार यदि तेरा बाप तेरा सारा माल ले ले तो उसे अधिकार है।

हज़रते कअ़ब बिन उजरह कहते हैं कि एक बार नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने आदेश दिया कि मिम्बर के क़रीब हो जाओ, हम लोग क़रीब आगये जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने मिम्बर की पहली सीढ़ी पर पग रखे तो कहा आमीन, जब दूसरे सोपान (ज़ीने) पर क़दम रखा तो कहा आमीन, और जब तीसरे ज़ीने पर कदम रखा तो कहा आमीन,

जब आप ख़ुत्बा समाप्त कर के नीचे उतरे तो हम (सह़ाबा) ने अर्ज़ किया कि हम ने आज आप से मिम्बर पर चढ़ते हुए ऐसी बात सुनी जो पहले कभी नहीं सुनी, आप ने फ़रमाया कि उस वक़्त जिब्रील अ़0 मेरे सामने आए थे, जब पहले ज़ीने पर मैं ने क़दम रखा तो उन्हों ने कहा : "हलाक (विनष्ट) हो वह शख़्स जिस ने रमज़ान का मुबारक महीना पाया फिर भी उस की मग़फ़िरत न हुई," मैं ने कहाः आमीन! फिर जब मैं ने दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो जिब्रील ने कहाः "हलाक (विनष्ट) हो वह शख़्स जिस के सामने आप का ज़िक्र आए और वह आप पर दुरूद न भेजे" मैंने कहा आमीन। और जब तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो जिब्रील अ़0 ने कहा : हलाक (विनष्ट) हो वह शख़्स जिस ने अपने माँ बाप को या उन में से किसी एक को बुढ़ापे में पाया और वह (उनकी सेवा द्वारा) अपने को जन्नत का हक़दार न बना ले" मैंने कहा आमीन।

इस ह़दीस में हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने तीन बार बददुआएं (शाप) दी हैं और तीनों बार ह़ुज़ूर सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आमीन कही। जिस को जिब्रील अ़लैहिस्सलाम बद दुआ़ दें और हमारे ह़ुज़ूर सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस पर आमीन कह दें क्या ऐसे शख़्स के बरबाद होने में कोई शक किया जा सकता है? यहां यह याद रहे कि अगर दुन्या में उस को ढील मिल गई और खाता पीता इतराता रहा लेकिन अगर तौबा किये बिना मर गया तो आख़िरत में इस हलाकत (विनाश) का उस को सामना करना ही है। अल्लाह तआ़ला ऐसे गुनाहों से बचा ले। वह तीनों गुनाह फिर दोहराता है।

1– रमजान का महीना मिले और आदमी ने रोज़ा रख कर नीज दूसरी नेकियां कर के अपनी मग़फ़िरत न करा ली तो हलाक हुआ।

2– ह़ुज़ूर सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मुबारक नाम अपनी ज़बान से लिया या लिखा हुआ पढ़ा या ख़ुद लिखा या किसी से आप का नाम सुना और आप पर दुरूद न पढ़ा अर्थात कम से कम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम न कहा **तो हलाक हो गया।**

3– **जिस ने अपने बूढ़े माँ** बाप को या दोनों में से एक को पाया और उन की सेवा से जन्नत पा लेने का सामान न कर लिया तो वह बर्बाद हो गया।

❑❑

बारिश की दुआ़

अल्लाहुम्मस्क़िना ग़ैसम्मुग़ीसन् मरीअ़म्मरीअ़न्, तबक़न ग़दक़न् आ़जिलन ग़ैर आजिलिन नाफ़िअ़न् ग़ैर ज़ारिन।

असली जीवन आख़िरत.....

केवल यही एक सूत्र है जो हमारे इस जीवन को अर्थपूण (बा माने) बनाता है। क्यों कि इस सिद्धान्त (उसूल) के बाद यह वर्तमान (मौजूदा) संसार केवल इक्षा की पूर्ति का प्रयत्न करने का स्थान बन जाता है। और मृत्यु के बाद आने वाला संसार (परलोक) इन प्रयत्नों के परिणाम पाने का संसार होता है।

इस बात को समझाने के लिये हमको जिस मार्ग दर्शन (रहनुमाई) की अवश्यकता है वह हमको कुरआन से मिलता है। जैसा कि इस लेख के आरम्भ में कहा गया है। यह दुनिया का जीवन कुछ नहीं किन्तु खेल तमाशा और मनो रन्जन और आख़िरत (परलोक) का घर ही असल ज़िन्दगी का स्थान है।

एक दूसरी जगह कुरआन में आया है। जिसमें हमें विश्वास दिलाते हुए अल्लाह कहता है। यक़ीनन आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर (अति उप युक्त) है। (93:4)

सच तो यह है कि अगर आख़िरत की कल्पना को हम अपने जीवन से हटा दें तो यह जीवन अपनी सार्थकता (मानवियत) ही खो देता है। आख़िरत के बिना यह जीवन इतना अनबूझा हो जाता है कि फिर इस संसार में जीना कोई अर्थ ही नहीं रखता है।

❑❑

क़िस्त 16

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षकों के लिय

– डॉ. सलामत उल्लाह

विषयों की बाहुल्यता

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे स्कूलों के पाठ्यक्रम में बेशुमार विषय दाख़िल कर लिये गये हैं। इन की तादाद से डर लगता है कि एक छोटे बच्चे पर यह सब कैसे लादे जा सकते हैं। स्कूल के पाठ्यक्रम और टाइम टेबल में ग्रामर, निबन्ध लेखन, गणित और बीज गणित, इतिहास व भूगोल अलग अलग विषय की हैसियत रखते हैं और इसीलिये वह अलग अलग पढ़ाये जाते हैं। पिछले अध्याय में हमने इस प्रकार के बंटवारे को अनुचित बताया था, इसे शिक्षक बहुत अर्से से महसूस कर रहे हैं कि शैक्षिक विषय वस्तु को बहुत से हिस्सों में बांट देना एक बड़ी गलती है। अतः उनका सुझाव है कि आपस में तअल्लुक रखने वाले विषयों को मिला कर उन की तादाद कम कर दी जाये। इस पर यह ऐतराज किया जा सकता है कि इस से कोई फायदा न होगा, क्यों कि विषयों की तादाद कम हो जाने से असल शिक्षा की विषय वस्तु में कोई कमी नहीं होगी। लेकिन यह ओछा ऐतराज है। क्योंकि जहां किसी विषय के हिस्से कर दिये जाते हैं जैसे भाषा के हिस्से पढ़ना लिखना, निबन्ध लेखन, व्याकरण आदि वहां टाइम टेबुल के हर हिस्से के लिये एक स्थान निश्चित कर देना जरूरी हो जाता है, बिना इस बात का लेहाज रखे हुए कि इन में से कौन ज़्यादा जरूरी है, लेकिन आगर हम इसे अध्ययन के एक बड़े दायरे का हिस्सा समझें तो हम बच्चे की शैक्षिक ज़रूरत के अनुसार उसे उचित समय पर मौक़ा देंगे, और इस प्रकार समय नष्ट नहीं होगा, जो इस सूरत में होता, अगर इस विषय के लिये टाईम टेबुल में अनिवार्य रूप से कुछ समय निश्चित कर दिया गया होता मिसाल के तौर पर हमारे प्राइमरी स्कूलों में लम्बे समय तक नौ दस साल के बच्चों को गुणवाचक संज्ञा आदि के प्रकार मात्र इस लिये रटाये जाते हैं कि टाइम टेबुल में ग्रामर के लिये भी एक घंटा होता है। यद्यपि उन का यह अभ्यास समय बिताने से ज्यादा हैसियत नहीं रखती ।

विषयवार शिक्षण का नतीजा

अब जो परस्पर सम्बन्ध को अधिक महत्व दिया जाने लगा है उस का एक कारण यह भी है कि विभिन्न विषयों के परस्पर सम्बन्ध की अनदेखी कर देने से एक बनावटी और हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो गयी है जिस ने बड़ी हद तक छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने से कुंठित और बद दिल कर दिय है। अगर वह किसी बाह्य कारण से ज्ञान प्राप्त करने के लिये तैयार भी होते हैं तो उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मिसाल के तौर पर बीजगणित को लीजिये, इसे "हिसाब" के एक सामन्य रूप की हैसियत से पेश करने के बजाय एक अलग विषय करार दिया गया है जिस में शुरू ही से भेदयुक्त चिन्हों से काम लिया जाता है जिन के अर्थ बच्चा अपने स्कूल के जीवन में शायद ही समझ सकेगा, जैसे बीजगणित का यह नियम कि <-> x <-> = + बच्चे को मात्र एक गोरखधंधा मालूम होता है। वह इस का अर्थ समझे बिना रट लेता है इस बीच हिसाब का काम अन्य विषयों से बिल्कुल अलग होता रहता है जिसमें अत्यधिक कठिन प्रश्नों से बच्चे को दोचार होना पड़ता है। शायद यही कारण है कि जब वह वास्तविक

जीवन में पदार्पण करता है तो उसे अपने स्कूल की "गणित" से कोई फायदा नहीं होता।

विभिन्न विषयों की अलग अलग शिक्षा के लिये विषयवार शिक्षक चाहिये। यद्यपि उच्च शिक्षा के लिये यह ज़रूरत सर्वमान्य है तथापि कम से कम माध्यमिक शिक्षा की समाप्ति तक यह बात उचित नहीं कि एक ही कक्षा के कई एक शिक्षक हों और वह एक दूसरे के काम से मतलब न रखें। विशेषकर प्राथमिक स्तर पर तो इस की कोई गुंजाइश ही नहीं है। याद रहे कि स्कूल का पूरा स्टाफ एक संयुक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयास कर रहा है। उद्देश्य यह है कि बच्चे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से तरक्की करें और वह बन सकें जिस के बनने की उन में क्षमता है इस का तकाजा है कि प्रत्येक शिक्षक अपने विषय को व्यवस्थित सकल के एक अंश की हैसियत से देखे, या यूं कहिये कि एक कक्षा के तमाम अध्यापक शैक्षिक ऐक्य को बनाये रखने के लिये आपस में मिलकर अपने कामों में रब्त (जोड़) पैदा करें। शिक्षण में इस की बड़ी सम्भावनायें हैं। कला से साहित्य को मदद मिल सकती है और इतिहास को भूगोल से और इसी प्रकार गणित को सांइस से। एक ही बच्चा आठ बजे जनरल साइंस पढता है और नौ बजे गणित सीखता है। अनजाने में वह इन दो अलग अलग विषयों को माइंड में रखने के लिये कोई न कोई तरीक़ा गढ़ता है। वह हिस्से जल्दी भूल जाते हैं जो अन्य विषयों से किसी प्रकार का रब्त नहीं रखते। बच्चा एक ही है उस के उस्ताद दर्जनों हो सकते हैं और अन्ततः वह वही याद रखता है जो उसने एक गठित सकल के रूप में पचा लिया है न कि वह जो उस्ताद ने ठूंस ठांस कर उस के गले से उतारने की कोशिश की है।

निष्कर्ष (नतीजा)

अगर टीचर एक से अधिक हैं तो एक दसूरे से सलाह कर के अपना कार्य क्रमबद्ध करना चाहिये। जैसे कला अध्यापक को दूसरे विषय पढ़ाने में मदद देनी चाहिये। इतिहास, भूगोल वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान आदि सभी विषय ऐसे हैं जिन के पढ़ाने में कला का कार्य बड़ी आसानियां मुहय्या कर सकता है। अतः कला अध्यापक को अपना काम हर्ज किये बिना वह अवसर धयान में रखने चाहिये जो दूसरे विषय पढ़ाने में पेश आते हैं। इस प्रकार न सिर्फ वह अपना कर्तव्य कला अध्यापक की हैसियत से, निर्वाह करेगा। बल्कि बच्चे के सामान्य विकास में प्रत्यक्ष रूप से सहायता देगा।

(जारी)

❑❑

नवाबी अवध.....

इसी फाटक से हो कर शेख़ों के मकानों तक पहुंचा जा सकता था। फाटक में शेखों ने एक नंगी तलवार लटका रखी थी। हर आने जाने वाले के लिये यह आवश्यक था कि उस तलवार को झुक कर सलाम करे फिर आगे बढ़े। किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि इस आदेश की अवहेलना करता। यहां तक दिल्ली शासन से जो भी हाकिम या सूबेदार नियुक्त होता था और वहां के शेखों से मिलने जाता था उसे भी उस तलवार को सलाम करना पड़ता था।

जब लखनऊ में नवाब सआदत खां बुरहानुल मुल्क दिल्ली दरबार से सूबेदार नियुक्त किये गये तब से अवध में नवाबी शासन का दौर शुरु हुआ और 139 वर्ष का सफ़र तय कर के बिरजीसक़दर पर जा कर समाप्त हुआ। अवध के शासकों का संक्षिप्त परिचय एवं उनके द्वारा किये गये निर्माण कार्यों का वर्णन निम्न में प्रस्तुत है। यहां यह बताना आवश्यक है कि आरम्भ में तीन शासकों की राजधानी फैजाबाद में थी लेकिन कभी–कभी लखनऊ भी आ कर रहते थे। चौथे शासक आसिफुद्दौला फैज़ाबाद से लखनऊ आ गये थे तभी से यहां निर्माण एवं विस्तार का कार्य आरम्भ हुआ।

(जारी)

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु0 ज़फ़र आ़लम नदवी

प्रश्न : नमाज़े जनाज़ा के लिये कोई विशेष जगह न हो और क़रीब में ईदगाह हो ता उस ईदगाह में नमाज़ जनाज़ा पढ़ना दुरुस्त है या नहीं? मकरूह तो नहीं है?

उत्तर : ईदगाह में नमाज़े जनाज़ा पढ़ सकते हैं, मकरूह भी नहीं है। अ़ल्लामा तह़तावी ने लिखा है कि ईदगाह और मदरसे में नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मकरुह नहीं है। क्यों कि ईदगाह तमाम अह़काम में मस्जिद की तरह़ नहीं।

(देखें तह़तावी अ़ला मराक़िल फलाह़ जिल्द पृष्ठ : 347)

प्रश्न : अगर कोई मस्जिद में नफ़्ल नमाज़ पढ़ रहा हो और मस्जिद के दरवाज़े पर नमाज़े जनाज़ा शुरुअ़ हो गई हो तो क्या इस हालात में जनाज़े की नमाज़ में शिरकत के लिये नफ़्ल नमाज़ तोड़ी जा सकती है?

उत्तर : नमाज़े जनाज़ा छूटने का भय हो तो नफ़्ल नमाज़ तोड़ कर नमाज़े जनाज़ा में शरीक हो सकते हैं परन्तु बअ़द में वह नफ़्ल नमाज़ पढ़ना होगी।

प्रश्न : एक जगह नमाज़े जनाज़ा हुई जनाज़ा उठाने पर पता चला कि वह जगह भीगी थी जो गाय भैंस के पेशाब से भीग गई थी, प्रश्न यह है कि नमाज़ हुई या नहीं? नमाज़ दोबारा तो न पढ़ना पड़ेगी?

उत्तर : मय्यित और उस का कफ़न पाक हों तो, जिस जगह जनाज़ा रखा गया उस का पाक होना ज़रूरी नहीं, नमाज़ दरुस्त है दोहराने की ज़रूरत नहीं। फ़तावा आ़लमगीरी में है कि नमाज़ जनाज़ा दुरुस्त होने के लिये उस जगह का पाक होना ज़रूरी नहीं जहां जनाज़ा रखा जाए अलबत्ता चाहिये यही कि जनाज़ा पाक जगह रख कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ें।

(आ़लमगीरी : 666)

मगर याद रहे कि नमाज़ जनाज़ा पढ़ने वालों के लिए ज़रूरी है कि उन के खड़े होन की जगह पाक हो वरना नमाज़ न होगी।

प्रश्न : एक ना मअ़्लूम शख़्स का सड़क पर ट्रक से अक्सीडेन्ट हो गया, पुलिस वालों ने कार्रवाई कर के लाश दफ़्न करवा दी बअ़द में मुसलमानों को मअ़्लूम हुआ कि वह मुसलमान की लाश थी। क्या बअ़द में उस की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी जाएगी? और कब तक पढ़ी जाएगी?

उत्तर : अगर किसी मुसलमान को नमाज़े जनाज़ा के बिना दफ़्न कर दिया जाए तो उस की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी जाएगी लेकिन यह नमाज़ उस वक्त तक हो सकती है जब तक लाश ख़राब होने और फट जाने का अनुमान न हो, इस की कोई मुद्दत मुतअ़य्यन नहीं, इस का अनुमान (अन्दाज़ा) लाश की दशा, ऋतु (मौसिम) ज़मीन के प्रभाव के अनुसार कहीं तीन दिन, कहीं दस दिन और कहीं एक महीना लाश ख़राब नहीं होती। लाश के फट जाने और ख़राब हो जाने के पश्चात नमाज़ पढ़ने की इजाज़त नहीं।

(बहरुर्राइक़ 2:182)

प्रश्न : हास्पिटल में जो बच्चे मुर्दा पैदा होते हैं तो कभी ऐसा होता है कि नर्स बच्चे को नहला कर कफ़न पहना देती है फिर उसे मुस्लिम क़बरिस्तान में दफ़्न के लिये भेज दिया जाता है। सुवाल यह है कि ग़ैर मुस्लिम नर्स का दिया हुआ ग़ुस्ल काफ़ी हो जाएगा या दोबारा ग़ुस्ल देना पड़ेगा?

उत्तर : बच्चा अगर मुर्दा पैदा हो तो फ़त्वा इसी पर है कि उसे ग़ुस्ल दिया जाएं गा और एक कपड़े में लपेट कर दफ़्न कर दिया जाए गा अल्बत्ता उस की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जाएगी।

(फ़तावा हिन्दीय : 1:159)

जहां तक ग़ैर मुस्लिम नर्स के ग़ुस्ल देने का मस्अला है तो इस बारे में फ़ुक़हा ने लिखा है कि ग़ुस्ल देने वाले का शरीअ़त का मुकल्ल्फ़ होना शर्त नहीं है लिहाज़ा नर्स का दिया हुआ ग़ुस्ल काफ़ी हो जाए गा। लेकिन बेहतर यही है कि जानकार मुसलमान ही ग़ुस्ल दे ताकि ग़ुस्ल सुन्नत के मुताबिक़ हो फिर मय्यित को ग़ुस्ल देना, कफ़न पहनाना, जनाज़े की नमाज़ पढ़ना मुसलमानों पर फ़र्ज़ किफ़ाया है अगर मअ़क़ूल (स्वीकृति योग्य) उ़ज्र (आपत्ति) के बिना कोई मुसलमान ग़ुस्ल न देगा तो सब गुन्हगार होंगे। अतः मुसलमान के यहां मरा बच्चा स्पताल में पैदा हो या घर में मुसलमान को नहलाना चाहिये कोई मजबूरी हो तो अलग बात है।

प्रश्न : शहरों में पश्चिमी ढंग के पेशाबख़ाने और शौचालय का चलन बढ़ता जा रहा है। इसी प्रकार बड़े शहरों में पानी के बजाय कागज़ का इस्तिंजा के रूप में प्रयोग भी चलन में है। इनके बारे में शरीअ़त के आदेश क्या हैं?

उत्तर : आजकल कुछ इस तरह के पेशाबख़ाने बन रहे हैं, जिनमें आदमी को खड़े होकर ही पेशाब करना पड़े। यही ह़ाल शौचालय का है वे इस प्रकार बनाये जाते हैं कि कुर्सियों पर बैठने की तरह आदमी बैठे और अपनी ज़रूरत पूरी करे।

अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने खड़े होकर पेशाब करने से मना किया है। इसी तरह इस प्रकार बैठ कर शौच करना भी आपके तरीक़े के ख़िलाफ़ है। ह़ज़रत सुराक़ा बिन मालिक से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने कहा है कि शौचालय में बायें पाँव पर सहारा लेकर बैठा जाए।

किसी कारण के बिना खड़े होकर पेशाब करने की अनुमति नहीं है। हाँ जहाँ बैठकर पेशाब करने में छींटें पड़ने और गंदगी लगने की आशंका हो तो वहां खड़े होकर पेशाब किया जा सकता है। जहां तक काग़ज़ से इस्तिंजा करने का प्रश्न है तो बहुत मजबूरी की ह़ालत के अ़लावा यह मकरूह है। अ़ल्लामा शामी (रह0) ने इसके मकरूह होने के कारणों की व्याख्या करते हुए लिखा है कि काग़ज़ चिकना होता है, जिससे गन्दगी के फैल जाने की आशंका है। दूसरी बात यह कि काग़ज़ ज्ञान और कला को सुरक्षित रखने का माध्यम है और एक क़ीमती चीज़ है इस लिये हमें इसका सम्मान करना चाहिए और गन्दे कामों में इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। अब रहा सवाल उस कागज़ का जो विशेष रूप से इसी काम के लिये तैयार किया जाता है तो इसके प्रयोग में कोई हर्ज नहीं लेकिन यदि पानी उपलब्ध हो तो इससे बचना चाहिए।

(जदीद फ़िक़्ही मसाइल : भाग–1 से)

प्रश्न : अक्सर ऐसा होता है कि बाजमाअत नमाज़ के बीच किसी नमाज़ी का मोबाइल फोन बजने लगा और काफ़ी देर तक बजता रहा। आजकल तो इनमें तरह–तरह की रिंग टोन होती हैं। इससे उस नमाज़ी के साथ दूसरे नमाज़ियों का भी ध्यान बंटता है। ह़ालांकि मस्जिदों में मोबाइल बन्द करने के निर्देश लगाये जाते हैं, लेकिन फिर भी किसी नमाज़ी के भूल जाने से ऐसा होता है। ऐसी ह़ालत में उस नमाज़ी को क्या करना चाहिए? उसे नमाज़ तोड़ कर मोबाइल बन्द करना चाहिए या उसे बजने देना चाहिए?

उत्तर : मस्जिद इ़बादत की जगह है, वहां ऐसा माह़ौल बनाये रखने का एहतिमाम करना चाहिए कि तमाम लोग पूरे इत्मीनान, सुकून और खुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (विनम्रता और एकाग्रता) के साथ नमाज़ अदा कर सकें। उन चीजों से बचना चाहिए जो नमाज़ियों की एकाग्रता व सुकून में बाधक हों।

एक बार एक व्यक्ति का ऊंट खो गया, उसने मस्जिद में इसका एलान करा दिया। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने ऐसा करने से मना किया और फ़रमाया :

"मस्जिदें तो मख़सूस काम (अल्लाह की इबादत) के लिए बनायी गयी हैं।" (इब्ने माजा)

शेष पृष्ठ 31

दूसरी किस्त

नवाबी अवध

शमीम एक़बाल ख़ाँ

शेख अब्दुर्रहीम के परिवार के अतिरिक्त यहां पठानों का एक गिरोह भी आया और दक्षिण की ओर बस गया इसके अतिरिक्त शेखों का एक दूसरा गिरोह पूरब की ओर भी बसा ये तीनों गिरोह अपने–अपने भूभाग के स्वामी थे परन्तु शेख अब्दुर्रहीम के परिवार वालों का प्रभाव अन्य दोनों पर प्रभावी था क्योंकि इनका सम्बन्ध दिल्ली की हुकूमत से था। इसलिये एक प्रकार से यही शेख जादे अंवध के हाकिम थे।

मोहल्ले और मकान

अकबर के जमाने से ही लखनऊ तरक्की करने लगा था। ऐसा लगता था कि अकबर को इस स्थान से काफी लगाव था क्योंकि उन्होंने यहां के ब्राहमणों को बाजपाई चढ़ावे के लिये एक लाख रुपया प्रदान किया था और तभी से लखनऊ के बाजपाई ब्राहमण प्रसिद्ध हुये। लखनऊ के पुराने हिन्दू मोहल्ले जो अकबर के समय में मौजूद थे वे निम्न थे।

1. बाजपाई टोला
2. बंजारी टोला
3. कटारी टोला
4. अहिरी टोला
5. सोन्धी टोला आदि

मिर्जा मण्डी व महमूद नगर

अकबर के पुत्र शहजादा सलीम ने मच्छी भवन के पश्चिम की ओर मिर्जा मण्डी की नीव डाली। इसी अवधि में लखनऊ के सुबेदार जव्वार खां के सहायक काजी महमूद बिलग्रामी ने चौक के दक्षिण की ओर महमूद नगर तथा शाहगंज आबाद किया और प्रसिद्ध अकबरी दरवाजा (अकबरी गेट) का निर्माण कराया।

फिरंगी महल

अकबर बादशाह के समय में ही घोड़ों का एक फ्रंसीसी व्यापारी यहां आया और व्यापार में उसे एक वर्ष में ही काफी लाभ हुआ। उस फिरंगी ने चौक के निकट चार भव्य भवन निर्मित कराये तथा अपना एक अस्तबल भी बनवाया। चूंकि उसे एक वर्ष के लिये ही रहने की दिल्ली से शासकीय अनुमति मिली थी। इस अविध के उपरान्त जब वह अनुचित रुप से जबरदस्ती रहना चाहा तो उसकी सम्पति, शाही हुक्म से जब्त करके उसे यहां से निकाल दिया गया। इस फिरंगी द्वारा बनवाये गये मकानात औरगजेब के समय तक सरकार के कब्जे में रहे। शहशाह औरंगजेब ने इन मकानों को मुल्ला निजामउद्दीन सहाल्वी को प्रदान कर दिया जिसमें उन्होने दीनी मदरसा कायम किया जो आज भी फिरंगी महल के नाम से मशहूर है।

इस्लामी शिक्षा का "केन्द्र फ़िरंगी महल" को स्थापित हुये तीन सदियां गुजर चुकी हैं इस अवधि में यहां से शिक्षा पूरी करके निकलने वाले विद्वानों की एक लम्बी सूची में मौलाना अब्दुल बारी फिरंगी महली जिनकी मृत्यु सन् 1926 में हुई का भी नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है। मौलाना के नेतृत्यु में फिरंगी महल का उद्देश्य "फिरंगियों का विरोध" था। "खिलाफत" की तहरीक (आन्दोलन) को "मुखालिफत" का पर्यायवाची समझा जाता था। यह आन्दोलन काफी हद तक मौलाना अब्दुल बारी के व्यक्तित्व से जुड़ा हुआ था।

तीन सौ वर्ष पूर्व से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के इस्लामी शिक्षा के केन्द्र का नाम फिरंगी महल है। यह एक विरोधाभास है कि फिरंगियों के महल में इस्लामी शिक्षा?

दूसरा फिरंगी महल

यह एक अजीब इत्तिफाक है कि फिरंगी महल के बाद

दारुल–उलूम नदवतुल–उल्मा के नये भवन का शिलान्यास उत्तर प्रदेश के तत्कालिक "गर्वनर सर जान बर्सकाट हीवेट" ने किया। इस सम्बन्ध में अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी फरमाते हैं :

"अजब हुस्ने इत्तिफाक है, हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा दारुल उलूम लखनऊ का "फिरंगी महल" जो दर्से निजामी का बानी है और जिसके दामने फैज से मौलाना बहरुल उलूम मुल्ला हम्दुल्ला, मुल्ला हसन वगैरह तालीम पा कर निकले। यह फिरंगी महल इस लिये कहलाता था कि एक फिरंगी की कोठी थी और इस लिये महल उसकी तरफ मन्सूब हो गया। शाह आलमगीर की सनद में यह नाम दर्ज है। इस जदीद दारुल उलूम (नदवतुल उल्मा) की बुनियाद हिज आनर लेफ्टीनेन्ट गवर्नर ने रखी कि वह भी अहले फिरंग हैं। मीर अकबर हुसैन अकबर इलाहाबादी ने इस मौके पर हुस्ने इत्तिफाक से शायराना तखय्युल पेश किया, लिखते हैं।

रखी बिनाये नदवा हिज आनर ने आके खुद
सच पूछिये अगर तों फिरंगी महल है यह

फिरंगी महल का परिचय कराते हुये रेख्ती के मशहूर शायर मीर यार अली तखल्लुस जॉन की शायरी में फिरंगी महल की आबरु बनी रही वह लिखते हैं।

फिरंगी महल गोरी बी साहिबा है दुनिया में जन्नत का तख्ता अजी सलामत खुदा रखे इस बाग को कि इस बाग के गुल हैं सब जन्नती जो बागी हैं उनको रहें खार खार यहां के न गुन्चे को हो बे कली बड़े छोटे सब दीन के रहनुमा यह हादी है मुर्शिद हैं कामिल वली कसम बाजी मरियम के सर की मुझे कि जिस शमा से लौ है मेरी लगी मैं सौ जान से क्यों न परवाना हूँ रहे उनके एकबाल की रौशनी वह मेरे मसीहा हैं गरदूँ जमां इनायत मेरे हाल पर है बड़ी चलो जान साहब मेरे साथ तुम रहेगी वहां दो घडी दिल्लगी अता मुझको फ़रमायेंगे आबरु हैं हर इल्म के कदरदां जौहरी

फाजिल नगर और मंसूर नगर

शहंशाह शाहजहां के समय में (सन् 1631ई.) अवध के सूबेदार सुल्तान अली शाह थे। इनके दो पुत्र थे जिनके नाम मिर्जा फाजिल तथा मिर्जा मंसूर थे। इन दोनों ने अपने अपने नाम से दो मोहल्ले बसाये जो महमूद नगर के दक्षिण में थोड़ा आगे बढ़ कर क्रमशः फाजिल नगर तथा मंसूर नगर आज भी प्रसिद्ध हैं।

इसी अवधि में अशरफ अली खां जो एक रिसालदार (सौ सवारो के अफसर) थे के नाम से अशरफाबाद और उनके भाई मुशर्रफ़ अली खां के नाम से मुशर्फाबाद बसाये गये थे जिसमें मुशर्फाबाद अब नौबस्ता के नाम से जाना जाता है। इन मोहल्लों के पश्चिम की ओर गढ़ी पीर खां, एक फौजी आफिसर पीर खां के नाम से आज भी प्रसिद्ध हैं।

टीले वाली मस्जिद

शहंशाह औरंगजेब किन्हीं कारणों से आयोध्या गये थे और वहां से देहली वापस होते समय लखनऊ में रुके थे उन्होंने टीला पीर शाह अहमद पर एक मस्जिद निर्माण कराई जो टीले वाली मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध है।

मोहम्मद शाह रंगीले के समय में अवध का सूबेदार गिरधानागां, एक बहादुर हिन्दु रिसालदार था। उसके चाचा छबीले राम दिल्ली शासन की ओर से इलाहाबाद का प्रभारी था। चाचा की मृत्यु के पश्चात् गिरधानागा अवध का सूबेदार मनोनीत हुआ। उसकी पत्नी जो रानी कहलाती थी के नाम से रानीकटरा आज तक प्रसिद्ध है।

अवध का कोई भी ओहदेदार शेखों के क्षेत्र में जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। यहां तक कि शाही महल मच्छी भवन को वह लोग अपने पूर्वजों की जायदाद समझने लगे थे इसी लिये किसी को पास में फटकने नहीं देते थे। उन लोगो ने इसी के पास दो भवन मुबारक महल तथा पंचमहल बनवाया था। इस सम्बन्ध में कुछ स्पष्ट नहीं है। कि पंचमहला पांच मंजिला इमारत थी या पांच मकान पास–पास में बने थे। इसके दक्षिण में एक बड़ा मेहराबदार फाटक था जो "शेखन दरवाज़ा" कहलाता था।

शेष पृष्ट 21

असली जीवन आख़िरत (परलोक)

अयाज अहमद फारूकी(अलीग)

यह दुनिया का जीवन यद्यप क्षणिक है परन्तु पारलौकिक जीवन का आधार है अतः अत्यंत महत्व है वास्तव में आखिरत (परलोक) का घर ही असल ज़िन्दगी है जो लोग आखिरत को भूल कर केवल इस दुन्या के आनन्द में ग्रस्त हैं कुर्आन मजीद उन को सूचित कर रहा है कि "और यह सांसारिक जीवन तो केवल दिल का बहलावा और खेल है। निःसन्देह आखिरत का घर ही वास्तविक जीवन है क्या ही अच्छा होता कि वै जानते। (29:64)

आज भी और सदैव आदमी की सबसे बड़ी इच्छा (ख्वाहिश) केवल यह रही है कि वह खुशियों से भरा हुआ जीवन बिताए। आदमी इसी फिक्र (चिन्ता) और उम्मीद में जीता रहता है और इसी में मर जाता हैं आदमी की तमाम कोशिशें और नजरये (दृष्टिकोण) इसी बात के चारों और घूमते हैं। लेकिन कोई नजरिया और चिन्तन आदमी को उस की इस सोच और कोशिश को सफल नहीं बना सका कि वह पूरी तरह खुशीयों से भरा और बेफिक्र (चिन्ता मुक्त) संसार अपने लिये बना सके और अपनी तमनाओं की मंजिल पा सके।

इस असफलता का केवल एक ही कारण है कि सभी लोग अपने सपनों को इसी संसार में पूरा होता देखना चाहते हैं किन्तु हजारो साल के अनुभव (तजुर्बो) ने केवल एक ही बात सिद्ध (साबित) की है कि यह दुनिया इन असीमित (लामहदूद) इक्षाओं (ख्वाहिशों) को पूरा करने के लिए अपर्याप्त (नाकाफी) है। इस दुनिया का सीमित होना और आदमी का अपनी आजादी का गलत उपयोग (इस्तेमाल) निर्णायक रूप (फैसला कुनशक्ल) में इस में सबसे बड़ी रुकावट है कि यह संसार आदमी के सपनों को साकार कर सके।

हम देखते हैं कि जब हम अपने सपनों को साकार करने में लगे रहते हैं तो अचानक ही हमारी मृत्यु हो जाती है। जब हम औधोगिक (सनती) उन्नति को प्राप्त करते ही होते है कि औद्योगिक समस्याए पैदा हो जाती है और औद्योगिक विकास (तरक्की) को निरर्थक (बेमाना)बना देती हैं। हम बहुत अधिक कुरबानिया देकर एक राजनीतिक (सियासी) व्यवस्था (निजाम) बनाते है। किन्तु सत्ता (इक्तिदार) की कुर्सी पर बैठे लोगों का बिगाड़ उसे व्यवहारिक (असली) रूप में असफल (नाकाम) बना देता है। इसी प्रकार हम अपनी पसन्द का एक जीवन बनाने की कोशिश करते है। लेकिन दूसरों की इर्ष्या (जलन) क्लेश (हसद) दुर्भावना (बदख्वाही) जुल्म और बदले की भावना हम को नाकाम (असफल) कर देती है। और हम स्वयम असफलता को देखते हुए इस दुनिया से विदा हो जाते हैं।

आदमी की इछाएं एक स्वाभाविक (फितरी) आवश्यकता है। किन्तु सतत अनुभवों से यह सिद्ध हो चुका है। कि हमारी उन इक्षाओं की पूर्ति इस पृथ्वीलोक (इस दुनिया) में पूरी नहीं हो सकती इस के लिये हम को एक दूसरी दुनिया और दूसरे हालात की अवश्यकता है। और यह इक्षाओं की पूर्ति मौत के बाद आने वाली दुनिया में ही सम्भव (मुमकिन) है।

शेष पृष्ठ 19

बच्चों का पालन पोषण कैसे हो?

नजमुस्साकिब अब्बासी गाजीपुरी

समाचार पत्रों की चीत्कार इस वास्तविकता को प्रगट करती है कि हमारे नगर और ग्रामीणी क्षेत्रों में अपराध प्रतिदिन का नियम बन गया है। अधिक आश्चर्य की बात यह है कि अधिकतर यह अपराध दस साल से अट्ठारह साल की आयु तक के नवयुवक करते है। यह मार्ग रहित युवक दंगा उपद्रव और हत्या लूट विनाश पर उतर आए है। मालदार और खाते पीते पंरिववारों के नवयुवक भी तस्करयों और गैंगरेप जैसी निकृष्ट दुर्घटनाओं में लिप्त हो रहे है। प्रश्न यह है कि ऐसा क्यों हो रहा है। इस का मूल कारण यह है कि अधिकतर माता पिता अपने बच्चों के उचित पालन पोषण में असावधानी बरत रहे है। बच्चों को उचित मार्ग की ओर ले जाना सरल नहीं है जबकि उनके आसपास समस्त उपकरण उन्हें बुराई की ओर आकृष्ट करते हों। समाज में गलियां बड़ी निर्दयी गुरू होती हैं। वह बच्चों को सतर्क, सन्देहजनक और विद्रोही बना देती हैं गलियों के प्रशिक्षण (तरबीयत) शिक्षार्थी नव युवक, झगडे, चोरी करने जेब काटने और हत्या करने में प्रवीणता (महारत) प्राप्त करते हैं। इन गलियों के प्रोफेसर कोनों में खड़े होकर नवयुवको को सफल तथा कृतार्थ जीवन (कामयाब ज़िन्दगी) का झांसा देते हैं यह वह दशायें और परिस्थितियां हैं जिनमें नगर निवासी और ग्रामवासी बच्चे पालन पोषण की गंतव्यस्थानों (मंजिलों) को पहुंचते हैं। इन नकारात्मक विवरणों की मांग है कि बच्चों को उचित प्रशिक्षण दे कर अच्छा मानव बनाया जाये, हजारों माता पिता इन चुनौतियों का उत्तर बड़ी सफलता से दे रहे हैं और उनके बचचे इसी समाज में प्रतिपालन पाने के बावजूद उत्तरदायी सम्मानित और सफल कृतार्थ नवयुवक सिद्ध होते हैं।

अगर आप चाहते है कि आप के बच्चे अच्छे हों। तो पहले आप स्वयं अच्छे बने। आप को स्वयं वैसा ही बनना चाहिये जैसे अपने बच्चों को बनाना चाहते हैं। बच्चे बड़े अनुकरण कारी होते हैं वह हमारे हर तरह के स्वभाव को अपनाते हैं जैसे–जैसे वह बड़े होते जाते हैं उनके यह आचरण वास्तविकता में ढलते चले जाते हैं। अगर आप धोका देने और चोरी में लिप्त होने से नहीं रुक सकते, अगर आप असभ्य भाषा उपयोग करते है तो फिर अपने बच्चे से अशुद्ध भाषा में वार्तालाप करने ही की आशा रखिये। अगर आप चाहते हैं कि आप के बच्चे अनुचित मार्ग पर न चलें तो आप को उनके सामने उचित स्वभाव ही प्रस्तुत करना चाहिये। बच्चों को अच्छा क्रियात्मक आदर्श दिखाना चाहिये।

यह बात मन में रखें कि आप ही अपने बच्चे को सभ्य बना सकते हैं। सदाचारी बना सकते हैं अपने बच्चों के लिए यदि आप के पास कोई समय नहीं तो परिणाम यह होगा कि वह मनमाने मार्ग पर चल निकलेंगे। बच्चे हमारा भविष्य है। और हमें उनके सर्वोत्तम भविष्य के लिए अपने उत्तरदायित्व को सुन्दर विधि से पूरा करना चाहिये। दादा दादी और दूसरे समीपवर्त्ती सम्बन्धियों को भी बच्चों के प्रशिक्षण में अपना सहायक बनाइये। माता को बच्चों के प्रशिक्षण के लिए पिता के सहयोग की विशेष आवश्यकता होती है।

शेष पृष्ठ 11

इस्लाम आतंक नहीं
अनुसरणीय जीवन-आदर्श

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

कई साल पहले 'दैनिक जागरण' में श्री बलराज मधोक का लेख 'दंगे क्यों होते हैं?' पढ़ा। इस लेख में हिन्दू–मुस्लिम दंगा होने का कारण कुरआन मजीद में काफिरों से लड़ने के लिए अल्लाह के फरमान बताये गये थे। लेख में कुरआन मजीद की वे आयतें भी दी गयी थीं।

इसके बाद दिल्ली से प्रकाशित एक पैम्फलेट (पर्चा) 'कुरआन की चौबीस आयतें, जो अन्य धर्मावलम्बियों से झगड़ा करने का आदेश देती है।' किसी व्यक्ति ने मुझे दिया। इसे पढ़ने के बाद मेरे मन में जिज्ञासा हुई कि मैं कुरआन पढ़ूं। इस्लामी पुस्तकों की दुकान में कुरआन का हिन्दी अनुवाद मुझे मिला। कुरआन मजीद के इस हिन्दी अनुवाद में वे सभी आयतें मिलीं, जो पैम्फलेट में लिखी थीं। इससे मेरे मन में यह गलत धारणा बनी कि इतिहास में हिन्दू राजाओं व मुस्लिम बादशाहों के बीच जंग में हुई मार–काट तथा आज के दंगों और आतंकवाद का कारण इस्लाम है। दिमाग भ्रमित हो चुका था इस भ्रमित दिमाग से हर आतंकवादी घटना मुझे इस्लाम से जुड़ी दिखायी देने लगी।

इस्लाम, इतिहास और आज की घटनाओं को जोड़ते हुए मैंने एक पुस्तक लिख डाली 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' जिसका अंग्रेजी अनुवाद 'The History of Islamic Terrorism' के नाम से सुदर्शन प्रकाशन, सीता कुंज, लिबर्टी गार्डेन, रोड नम्बर 3, मलाड (पश्चिम) मुम्बई–400064 से प्रकाशित हुई।

मैंने हाल में इस्लाम धर्म के विद्वानों (उलमा) के बयानों को पढ़ा कि इस्लाम का आतंकवाद से काई संबंध नहीं है। इस्लाम प्रेम, सद्भावना व भाईचारे का धर्म है। किसी बेगुनाह को मारना इस्लमा धर्म के विरुद्ध है। आतंकवाद के खिलाफ फतवा भी जारी हुआ।

इसके बाद मैंने कुरआन मजीद में जिहाद के लिए आयी आयतों के बारे मे जानने के लिए मुस्लिम विद्वानों से संपर्क किया, जिन्होंने मुझे बताया कि कुरआन मजीद की आयतें भिन्न–भिन्न तत्कालीन परिस्थितियों में उतरीं। इसलिए कुरआन मजीद का केवल अनुवाद ही न देखकर यह भी देखा जाना जरूरी है कि कौन–सी आयत किस परिस्थिति में उतरी तभी उसका सही मतलब और मकसद का पता चल पाएगा।

साथ ही ध्यान देने योग्य है कि कुरआन इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा गया था। अतः कुरआन को सही मायने में जानने के लिए पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0)की जीवनी से परिचित होना भी जरूरी है।

विद्वानों ने मुझसे कहा– "आपने कुरआन मजीद की जिन आयतों

मुसलमान आतंकी नहीं

आतंकवाद पर मुसलमानों के विचार जानने के लिए मैंने हजारों मुसलमानों से संपर्क किया। इनमें सभी मुसलमानों के अपने पड़ोसी गैर–मुसलमानों से भाई या मित्र से संबंध मैंने देखे। उनमें से कोई भी मुसलमान नहीं चाहता कि निर्दोष लोगों की कोई हत्या करे। गैर–मुसलमान (जिन्होंने मुसलमानों का कुछ न बिगाड़ा हो) से नफरत करने वाला, आतंकवाद समथ्रक एक भी मुसलमान मुझे नहीं मिला। इसके बाद भी यदि कोई ऐसा है तो उसके लिए सभी मुसलमानों को या इस्लाम को किसी प्रकार घुमा–फिराकर दोषी नहीं ठहराया जा सकता। वह अपवाद है और ऐसे अपवाद सब जगह होते हैं। आतंकवाद के दुष्परिणाम मुसलमान और गैर–मुसलमान दोनों भुगत रहे है। क्योंकि आतंकवाद का शिकार दोनों हो रहे हैं, जबकि शक की नजर से केवल मुसलमान ही देखे जा रहे हैं। आतंकवाद, आतंकवाद है उसे किसी धर्म या सम्प्रदाय से जोड़ना अन्यायपूर्ण है।

का हिन्दी अनुवाद अपनी किताब में लिया है, वे आयतें अत्याचारी काफिर मुश्रिक लोगो के लिए उतारी गयीं जो अल्लाह के रसूल (सल्ल0) से लड़ाई करते और मुल्क में फसाद करने के लिए दौड़े फिरते थे। सत्य धर्म की राह में रोड़ा डालने वाले थे ऐसे लोगों के विरुद्ध ही कुरआन में जिहाद का फरमान है।

उन्होंने मुझसे कहा कि इस्लाम की सही जानकारी न होने के कारण लोग कुरआन मजीद की पवित्र आयतों का मतलब समझ नहीं पाते। यदि आपने कुरआन मजीद के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की जीवनी पढ़ी होती, तो आप भ्रमित न होते।''

मुस्लिम विद्वानों के सुझाव के अनुसार मैंने सबसे पहले पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की जीवनी पढ़ी। जीवनी पढ़ने के बाद इसी नजरियो से जब मन की शुद्धता के साथ कुरआन मजीद शुरू से अंत तक पढ़ा, तो मुझ कुरआन मजीद की आयतों का सही मतलब और मकसद समझ में आने लगा। सत्य सामने आने के बाद मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ कि मैं अनजाने में भ्रमित था और इसी कारण ही मैंने अपनी उक्त किताब 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' में आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ा है जिसका मुझे हार्दिक खेद है।

मैं अल्लाह से, पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) से और सभी मुस्लिम भाइयों से सार्वजनिक रूप से माफी मांगता हूं तथा अज्ञानता में लिखे व बोले शब्दों को वापस लेता हूं। सभी जनता से मेरी अपील है कि 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' पुस्तक में जो लिखा हैं उसे शून्य समझें।

दुष्प्रचार

शुरुआत कुछ इस तरह हुई कि भारत सहित दुनिया में यदि कहीं विस्फोट हो या किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों की हत्या हो और उस घटना में संयोगवंश मुसलमान शामिल हैं तो उसे इसलामिक आतंकवाद कहा गया।

थोड़े ही समय में ही मीडिया सहित कुछ लोगों ने अपने–अपने निजी फायदे के लिए इसे सुनियोजित तरीके से इस्लामिक आतंकवाद की परिभाषा में बदल दिया। इस सुनियोजित प्रचार का परिणाम यह हुआ कि आज कहीं भी विस्फोट हो जाए उसे तुरंत इस्लामिक आतंकवादी घटना मानकर ही चला जाता है।

इसी माहौल में पूरी दुनिया में जेनता के बीच मीडिया के माध्यम से और पश्चिमी दुनिया सहित कई अलग–अलग भाषाओं में सैकड़ों किताबें लिख–लिखकर यह प्रचारित किया गया कि दुनिया में आतंकवाद की जड़ इस्लाम है।

इस दुष्प्रचार में यह प्रमाणित किया गया कि कुरआन में अल्लाह की आयतें मुसलमानों को आदेश देती हैं कि–वे, अन्य धर्मे को मानने वाले काफिरों से लड़ें, उनकी बेरहमी के साथ हत्या करें या उन्हें आतंकित कर जबरदस्ती मुसलमान बनाएं, उनके पूजास्थलों को नष्ट करें– यह जिहाद है और इस ज़िहाद करने वाले को अल्लाह जन्नत देगा। इस तरह योजनाबद्ध तरीके से इस्लाम को बदनाम करने के लिए उसे निर्दोषों की हत्या कराने वाला आतंकवादी धर्म घोषित कर दिया गया और जिहाद का मतलब आतंकवाद बताया गया।

जारी

❑❑

इस्लामी आदर्श स्वीकार करने योग्य

इस्लाम ने सत्य का नारा 'अल्लाहु अकबर' (यानी अल्लाह सबसे बड़ा है) और 'ला इला–ह इल्लल्लाह' (यानी अल्लाह के अलावा दूसरा कोई पूज्य नहीं) के रूप में इस महान सत्य को सारी दुनिया को दिया। इस्लाम, आतंक नहीं, आदर्श है। इस्लाम का यह आदर्श स्वीकार करने योग्य है। इस्लाम केवल मुसलमानों के लिए ही आदर्श नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए है, मानवता के कल्याण के लिए है। विदित है ऐसे इस्लाम को बदनाम करने के लिए, आतंकवाद को मुसलमान से जोड़ने की बड़ी सुनियोजित साजिश की जा रही है। मोबाइल से एस0एम0एस0 भेजकर प्रचारित किया जाता है कि 'हर मुसलमान आतंकवादी नहीं है, लेकिन हर आतंकवादी मुसलमान है।' आतंकवादी यदि मुसलमान ही होते तो आतंकवादी हमले मुसलमानों पर न होते, हैदराबाद की मस्जिद तथा मालेगांव (महाराष्ट्र) की ईदगाह पर ये हमले न होते।

करियर

युवा वर्ग के लिये
आई0ए0एस0 में मुस्लिम नुमाइंदगी

एम0 हसन अंसारी

(उर्दू रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ (डाक) 5 जून 2009 के पेज पाँच पर उपरोक्त शीर्षक से सईद सहरवरदी के लेख का सारांश नवजवानों में एक स्प्रिट पैदा करने के लिये प्रस्तुत है।)

आई0ए0एस0 परीक्षा 2008 का नतीजा उस समय आया जब सारा देश पार्लियामेन्ट के चुनाव में लगा था। इसी कारण इसके सार्थक विश्लेषण में देर हुई। इस विश्लेषण (एनलिसिस) का मकसद मुस्लिम नवजवानों के रूजहान को चिन्हित करना है।

आई0 ए0 एस0 की प्रतियोंगितात्मक प़रीक्षा खुद मुख्तार संस्था इण्डियन पब्लिक सर्विस कमीशन की निगरानी में होता है। इसके बोर्ड व स्टाफ की नियुक्ति गृह विभाग करता है। इसके चेयरमैन और बोर्ड के सदस्यों की नियुक्ति करते समय उन की लियाकत (योग्यता) और ग़ैरजानिबदारी (निष्पक्षता) का खास ख्याल रखा जाता है। अब तक इस की पारदर्शिता पर किसीने उँगली नहीं उठाई। इम्तेहान के तीन मरहले हैं– प्री, मेन और इन्टरव्यू। हर मरहले को इन्तेहाई राजादारी के साथ अंजाम दिया जाता है। यह बात पूरे विश्वास से कही जा सकती है कि किसी मरहले पर उम्मीदवार की जाति और उसका मजहब उसके चुने जाने में रूकावट नहीं होता।

2005 से 2008 तक के चार वर्षो के आई0ए0एस0 के नतीजों के जायजः से पता चलता है कि मुस्लिम नवजानों में मुकाबले के इम्तेहानों में शामिल होने का रूजहान (लगाव) उभरा है। उन की कामयाबी आबादी में उन के अनुपात से बहुत कम है। लेकिन इसके लिये उन को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। उन का यह लगाव प्रशंसनीय है। उन्होंने जो कुछ भी हासिल किया है। वह रिजर्वेशन जैसी किसी बैसाखी के बिना है। आजादी के बाद काफी अर्से तक मुस्लिम नवजवानों में आम एहसास यह था कि उन के खिलाफ तअस्सुब बर्ता जाता है, वह कुछ भी कर लें, उन को नहीं लिया जायेगा। यह एहसास बिल्कुल बेबुनियाद नहीं है। लेकिन वह अब इस से डरते नहीं। अब उनका ध्यान सिर्फ आई0ए0एस0 तक सीमित नहीं। किसी मैदान में भी अपने पैरों पर खड़ा हो जाना उन की पहली पसन्द मालूम हेाती है। मुस्लिम लड़के लड़कियां पूरी लगन के साथ कम्प्यूटरों के इस्तेमाल और इनफारमेशन टेक्नोलाजी में भी लगे हैं। निजी कारोबार उसकी पहली पसन्द है लेकिन वह सरकारी सेवा में अपनी जगह बनाने का प्रयास कर रहा है। उस में तालीमी बेदारी आई है, वह जागा है। आजादी के बाद ऐसी संस्थाओं की संख्या बढ़ी है जो मुसलमानों के लिये मखसूस हैं। लेकिन मुसलमान इन से पूरा फायदा नहीं उठा रहे हैं। इस की एक मिसाल यह है कि इस समय एक उर्दू मीडियम यूनीवर्सिटी मौजूद है और उम्मीदवार उर्दू मीडियम से आई0ए0एस0 का इम्तेहान बड़ी तादाद में नहीं दे रहे हैं। 2007 में दारूल उलूम देवबन्द के पढ़े वसीमुर्रहमान ने उर्दू मीडियम से आई0ए0एस0 का मुकाबले में शामिल हुए और कॉलीफाई कर गये। उनका अनेक जगहों पर स्वागत किया गया, गुलदस्ते पेश किये गये, हार पहनाये गये। 2008 के नतीजों के बाद कोई ऐसी खबर नहीं मिली।

2008 के इम्तेहान में 31 उम्मीदवारों के कामयाब होने की सूचना है। उन के नाम और पोजीशन यह हैं :–

1.	सूफ़िया फ़ारूक़ी	20
2.	सरफ़राज़ अहमद	26
3.	शीन–इक़बाल	51
4.	तम्बोली अयाज फ़ख़र भाई	75
5.	सदर आलम	90
6.	कोया परवीन	120
7.	मासूम अली सरवर	128
8.	अयाज़ इस्माईल परे	134
9.	आयशा रानी	139
10.	ज़ियाउल हक़	169
11.	आशिकुज़्ज़माँ	244
12.	बशीर अहमद	257
13.	सबीहा रिज़वी	303
14.	अनीस अहमद अंसारी	304
15.	पी0 इम्तियाज़ खाँ	353
16.	मशहूदुर्रहमान फ़ारूक़ी	382
17.	शाहनवाजुज़्ज़माँ	393
18.	जान हाशिम	398
19.	क़ाज़ी सुहेल अनीस अहमद	460
20.	टी0के0 शेबू	472
21.	तारिक़ माबूद	499
22.	गीलानी बाशा	502
23.	गुलजार बेगम	523
24.	मो0 शाहिद आलम	540
25.	मो0 फ़ैज़ान नैयर	546
26.	महफूज़र्रहमान	582
27.	मो0 सादिक़ आलम	595
28.	मो0 सालिक परवाज़	603
29.	मो0 फैजुल हक़	606
30.	मो0 यूसुफ़ कुरैशी	619
31.	अब्दुल हकीम	684

2002 में आई0ए0एस0 में नौ मुस्लिम उम्मीदवारों का चयन हुआ। इस से पहले इन की तादाद दस से ऊपर रही है। 2006 में यह संख्या 18 और 2007 में 27 हो गई। और 2008 में 31 है। ऊपर जाता यह ग्राफ बताता है कि मुस्लिम नवजानों में मुकाबलों में शिर्कत का रुजहान जड़ पकड़ चुका है। यह अच्छी बात है। औसत फीसद के लेहाज से पिछले तीन वर्षों में यह साढ़े तीन फीसद से ज्यादा और 2008 में चार प्रतिशत के बहुत करीब पहुँच चुका है। एक और बात नजर अन्दाज नहीं की जा सकती। मुस्लिम पिछड़ी जाति के बिरादरियों के अन्दर भी उभरने का यह रूजहान साफ नजर आता है।

इस समय देश में मुसलमानों की संख्या लगभग अट्ठारह करोड़ बताई जाती है। उस के 31 उम्मीदवारों की कामयबी पर हम खुश होते हैं, लेकिन एक करोड़ से कम आबादी के शहर इलाहाबाद से लगभग इतने ही उम्मीदवार कामयाब हुए हैं। दूसरी बात यह कि तीन चार प्रतिशत से वह नौकरियों में आबादी के अनुपात से नुमाइंदगी नहीं हासिल कर सकते। वह बदस्तूर कम रहेगी। अगर अगले पचीस वर्षों में मुस्लिम उम्मीदवारों की सफलता का अनुपात पचीस प्रतिशत रहे तो वस्तुस्थिति बेहतर हो सकती है। कौन इस की जिम्मेदारी ले सकता है?

❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

मोबाइल फोन की घंटी से यकीनन मस्जिद में मौजूद सभी लोगों का ध्यान बंटता है। नमाज़ का खुशूअ व खुजूअ प्रभावित होता है। इसलिए मस्जिद में आने से पहले मोबाइल का या तो स्विच ऑफ़ कर देना चाहिए या उसकी घंटी बन्द कर देनी चाहिए। अगर कोई व्यक्ति ऐसा करना भूल जाए और नमाज़ के बीच घंटी बजने लगे तो फौरन उसे बन्द करने की कोशिश करनी चाहिए। जेब में हाथ डालकर या मोबाइल बाहर निकाल कर, जिस्म की थेड़ी–सी हरकत के साथउसे आसानी से बन्द किया जा सकता है।

कुछ लोग समझते हैं कि नमाज़ के अरकान की अदायगी में जिस्म की जो हरकत होती है, उसके अलावा मामूली–सी हरकत से भी नमाज़ खराब हो जाती है। हालांकि यह बात सही नहीं है। कई हदीसें हैं, जिनसे मालूम होता है कि नमाज़ के बीच ज़रूरत पड़ने पर थोड़ी–सी हरकत से नमाज़ खराब नहीं होती। इस सिलसिले में फुक्हा की इस बात पर सहमति है कि अमले कसीर (कोई बड़ी हरकत) से नमाज़ खराब हो जाती है, अमले कलील (छोटी हरकत) से नहीं। उनके अनुसार अमले कसीर वह है कि कोई व्यक्ति नमाज़ के बीच कोई ऐसा काम करे कि उसे देखने वाले को लगे कि वह व्यक्ति नमाज़ नहीं पढ़ रहा है।

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

– इदारा

हुमायूं बादशाह (1531–1556)

प्रारंभिक जीवन– बाबर के चार पुत्र और तीन कन्याएं थीं जिनमें हुमायूं सबसे बड़ा बेटा था। हुमायूं का जन्म 6 मार्च, 1508 ई0 को काबुल में हुआ था। उसकी माँ माहल सुल्ताना हिरात के हुसेन बेकरा के खानदान की थी जो शिया मुसलमान था। अपने पिता के जीवन–काल में ही हुमायूं को अनेक युद्धों में भाग लेने का तथा प्रशासकीय अनुभव प्राप्त हो चुका था। उसने पानीपत तथा खनवा के युद्धों में भाग लिया था। और अपनी सैनिक प्रतिभा का प्रमाण दिया था। बाबर ने उसे पूर्व के विद्रोही अफगान अमीरों के विद्रोहों के दमन करने का कार्य भी सौंपा था और उसमें उसने पूरी सफलता प्राप्त की थी। हुमायूं की इन सफलताओं से प्रसन होकर बाबर ने दो बार बदख्शां का शासन–प्रबन्ध हुमायूं को सौंपा। बदख्शां पर उजबेग लोग, जो बड़ी ही सामरिक प्रवृत्ति के होते थे, प्रायः आक्रमण कर दिया करते थे परन्तु हुमायूं वहां पर शान्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित रखने में सफल रहा। भारत में भी बाबर ने सम्भल का शासन हुमायूं को सौंप दिया था।

सिंहासनारोहण– अपने पिता के उपरान्त 29 दिसम्बर, 1530 ई0 को हुमायूं आगरे के सिंहासन पर बैठा। उस समय हुमायूं की अवस्था 23 वर्ष की थी। सिंहसनारोहण के समय बड़ी खुशी मनायी गई और खूब दान–दक्षिणा दी गई। राज्य के अफसरों तथा अमीरों ने उसका स्वागत किया और उसके प्रभुत्व को सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार हुमायूं को राज्यारोहण में कोई कठिनाई न हुई।

हुमायूं की प्रारम्भिक कठिनाइयां– यद्यपि हुमायूं को सिंहासन प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हुई परन्तु उसका मार्ग बिल्कुल निष्कटक न था वरन् उसमें अनेक कठिनाइयां थीं जिनका विश्लेषण कर लेना आवश्यक है।

(1) साम्राज्य की विशालता– बाबर ने थोड़े ही दिनों में अपने बाहु–बल से एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर ली थी। दक्षिण में मालवा तथा राजपूताना के राज्य उसके साम्राज्य की सीमा पर स्थित थे। बाबर की मृत्यु के उपरान्त हुमायूं को वह विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ। इस साम्राज्य को युद्धकालीन परिस्थितियों में तो संभाला जा सकता था परन्तु शान्तिकालीन परिस्थितियों में इसका संभालना अत्यन्त कठिन था, क्योंकि इसकी कोई आधारशिला न थी।

(2) साम्राज्य की दुर्बलता हुमायूं को अपने पिता से जो साम्राज्य मिला उसकी नींव बड़ी कमजोर थी। बाबर को इस साम्राज्य को व्यवस्थित बनाने का न तो समय मिला और न इसे व्यवस्थित बनाने की सम्भवतः उसमें प्रतिभा ही थी। उसने अपना राज्य अपने अमीरों तथा जागीरदारों में बांट दिया था। यह अमीर तथा जागीरदार अपने–अपने क्षेत्र में शान्ति तथा सुव्यवस्था बनाये रखने के लिये उत्तरदायी होते थे। आवश्यकता पड़ने पर इन्हें राज्य की सैनिक–सहायता देनी पड़ती थी और एक निश्चित धन–राशि सरकारी खजाने में भेज देना पड़ता था। यह सामन्तीय–प्रथा हुमायूं के लिए खतरे से खाली न थी। यह सामन्त कभी भी धोखा दे सकते थे और हुमायूं के लिए सिरदर्द बन सकते थे।

(3) शासन की व्यवस्था– भारत में बाबर का शासन–काल युद्धों का काल था। अभी यह युद्ध पूर्ण–रूप से समाप्त न हुए थे कि बाबर का परलोकवास हो गया। अतएव हुमायूं जिस समय सिंहासन पर बैठा वह युद्धकालीन परिस्थितियों का काल था। अभी मुगल तथा अफगान एक–दूसरे को उन्मूलित करने में संलग्न थे और उनकी

सेनाओं का संचालन निरन्तर होता रहता था। ऐसी स्थिति में हुमायूं के साम्राज्य में बड़ी राजनैतिक तथा आर्थिक गड़बड़ी फैली हुई थी और शासन अव्यवस्थित–सा हो रहा था। अतएवं हुमायूं को शासन को व्यवस्थित बनाना था।

(4) सेना का असन्तोषजनक संगठन– मुगल सेना का संगठन भी सन्तोषजनक न था। उसने मुगल, उजबेग, तुर्क, फारसी, अफगान, हिन्दुस्तानी सभी मिले हुए थे। ये सेनाएं प्रायः अपने कबीले के नेता की अध्यक्षता में युद्ध किया करती थीं। इन विभन्न कबीलों में प्रायः ईर्ष्या–द्वेष का प्रकोप रहता था। अतएव सेना में एकता की वह भावना विद्यमान न थी जो एक सुसंगछिठत सेना में होनी चाहिए। अतएव युद्ध के समय इस सेना पर बहुत अधिक भरोसा नहीं किया जा सकता था वरन् सेना में प्रायः संघर्ष चला करता था जो राज्य के लिए कभी भी बड़ा धातक सिद्ध हो सकता था।

(5) राजवंशीय राजकुमारों के कुचक्र– अपने भाइयों की ओर से भी हुमायूं को बड़ा खतरा था। हुमायूं के तीन भाई थे अर्थात् कामरान, अस्करी तथा हिन्दाल। इसमें कामरान बड़ा ही महत्वाकांक्षी था। उसमें सामरिक तथा प्रशासकीय प्रतिभा भी थी। अतएव यह सम्भव था कि वह हुमायूं की प्रतिद्वन्दी बन जाय और स्वयं हिन्दुस्तान का बादशाह बन जाने की कामना करने लगे। अन्य भाई भी हुमायूं के मार्ग में बाधाएं उत्पन करते थे। अतएव भाइयों के कुचक्र का भी सामना करने के लिए हुमायूं को तैयार रहना था।

(6) राजकुमारों के समर्थकों के षड्यन्त्र– अनेक अमीर इन राजवंशीय राजकुमारों के समर्थक तथा अनुयायी बन गये। वे लोग अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये इन राजकुमारों को उभारने लगे और एक को दूसरे से लड़ाने के प्रयत्न में संलग्न हो गये। इन अमीरों को राज्य के हित की बिल्कुल चिन्ता न थी वरन् वे अपने निजी स्वार्थ को पूर्ण करना चाहते थे?

(7) मिर्जा लोगों के षड्यन्त्र– मिर्जा दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात मीर तथा जा। मीर का अर्थ होता है अच्छा या बड़ा और जा का अर्थ होता है जन्म लेना। अतएव मिर्जा उन कुलीनों को कहते थे जो राजवंश से सम्बन्धित थे। यह लोग अपने को राज–वंशीय राजकुमारों से कम न समझते थे और अपने को राजसिंहासन का अधिकारी समझते थे। हुमायूं को इन मिर्जा लोगों की ओर से उतना ही बड़ा खतरा था जितना अपने भाइयों की ओर से। इन दिनों राज्य में कुछ बड़े ही प्रभावशाली तथा शक्तिशाली मिर्जा विद्यमान थे। यह तैमूर के वंशज थे और बाबर के सिंहासन के लिये उसी प्रकार दावेदार थे जिस प्रकार बाबर के पुत्र। इनमें सबसे अधिक प्रभावशाली मुहम्मद जमां मिर्जा था जिसका बाबर की पुत्री मासूमा बेगम के साथ हुआ था। पहले वह बिहार का शासक बना दिया गया था परन्तु बाद में जौनपुर का शासक बना दिया गया जो मुगल–साम्राज्य की सीमा पर स्थित था। अपने प्रभाव तथा अपनी स्थिति के कारण वह कभी भी हुमायूं के लिए संकट उत्पन कर सकता था। दूसरा प्रभावशाली मिर्जा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा था जो सुल्तान हुसेन की लड़की का पुत्र था। वहां पर ध्यान देने की बात यह है कि इन मिर्जा लोगों के पास कोई पैतृक सम्पति न थी; अतएव केवल भारतवर्ष में ही वे अपने निजी राज्य के स्थापित करने की आकाक्षां की पूर्ति कर सकते थे। अतएव हुमायूं को इन मिर्जा लोगों से भी सतर्क रहना था क्योंकि ये लोग किसी भी सकटापन स्थिति में हुमायूं के साम्राज्य को बन्दर–बांट कर सकते थे।

(8) अफगानों की समस्या– हुमायूं को अफगानों का भी सामना करना पड़ा था। यद्यपि बाबर ने पानीपत तथा घाघरा युद्धों में अफगानों पर विजय प्राप्त कर ली थी परन्तु वह उनकी शक्ति को पूर्णरूप से उन्मूलि न कर सका था। यद्यपि वे छिन्न–भिन्न हो गये थे और उनका नैतिक–बल समाप्त–सा हो गया था परन्तु उनमें से अधिकांश मुगलों के अधिपत्य को स्वीकार करने के लिये उद्यत न थे। इन लोगों ने महमूद लोदी

को अपना सुल्तान घोषित कर दिया था और उसी के झण्डे के नीचे अपनी शक्ति को फिर से संगठित करने में लगे हुए थे। विबन, बायजीद, मारूफ, फार्मूली जैसे बड़े ही योग्य तथा शक्तिशाली अफगान नेताओं ने अपनी सेनाओं के साथ विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया और अपनी खोई हुई प्रभुत्व–शक्ति के स्थापित करने के अवसर की ताक में थे। यदि हुमायूं इन अफगानों का दमन करने का प्रयत्न करता तो उन्हें बिहार तथा बंगाल में संरक्षण प्राप्त हो जाने की पूरी सम्भावना थी। वासतव में बंगाल तथा गुजरात के शासक मिलकर मुगलों को हिन्दुस्तान से मार भगाने की येजनाएं बना रहे थे।

हुमायूं को जितना बड़ा ख़तरा बिहार तथा बंगाल के अफगानों से था उससे कहीं अधिक बड़ा खतरा उसे गुजरात के शासक बहादुरशाह से था। बहुादुरशाह बड़ा ही महत्वाकांक्षी नवयुवक था। अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए उसके पास साधन भी थे। उसका राज्य बड़ा धनी तथा सम्पन्न था। हिन्दुस्तान में सबसे अच्छा तोपखाना उसी के पास था और उसे बड़े ही योग्य अफसरों की सेवाएं प्राप्त थीं। उसकी शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि उसके पड़ोसी राज्य उससे आतंकित रहते थे। राजपूताना, मालवा तथा दक्षिण–भारत के राज्य इतने निर्बल हो गये थे कि उनमें विरोध करने तक की क्षमता न थी। ऐसे बीर तथा शक्तिशाली अफगान शासक की ओर अन्य अफगान सरदारों का आकृष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था। फलतः फतेह खां, कुतुब खां, आलम खां आदि अफगान सरदार मुगल दरबार के कोपभाजन बन जाने पर गुजरात चले गये। बहादुरशाह ने उनका स्वागत किया और जागीरों तथा पदों से उन्हें पुरस्कृत किया। उसने उसकी हर प्रकार से सहायता करने का वचन दिया। इस प्रकार बहादुरशाह हुमायूं का सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी बन गया। उसका प्रभाव उत्तरी भारत में बढ़ता ही जा रहा था और उसकी दृष्टि दिल्ली के सिंहासन पर लगी हुई थी। अतएवं हुमायूं को उसकी ओर से सतर्क रहना था और उसकी गतिविधि पर कड़ी दृष्टि रखनी थी।

(9) राजपूतों की ओर से खतरा– यद्यपि बाबर ने खनवा के युद्ध में राणा सांगा को परास्त कर दिया था जिसका राजपूत–संघ पर घातक प्रभाव पड़ा था परन्तु राणा सांगा का पुत्र रत्नसिंह फिर अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा था। राजपूत लोग मुगलों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते थे। अतएव वे उन्हें भारत से निकाल बाहर करने में अफगानों के साथ गठबन्धन कर सकते थे। अस्तु, हुमायूं को अफगानों तथा राजपूतों के संयुक्त मोर्चे का सामना करने की आवश्यकता पड़ सकती थी।

(10) सांम्राज्य–विभाजन की समस्या– हुमायूं के समक्ष जो तात्कालिक समस्या थी वह साम्राज्य–विभाजन की समस्या थी। तुर्को तथा मंगोलों की प्राचीन परम्परा के अनुसार बाबर की मृत्यु के उपरान्त उसका साम्राज्य उसके पुत्रों में विभक्त हो जाना चाहिए था। यदि हुमायूं इस परम्परा की उपेक्षा कर सारा साम्राज्य अपने अधिकार में रखने का प्रयत्न किये होता तो यह सम्भव था कि उसके भाई उनके विरुद्ध विद्रोह का झण्डा कर देते और अमीर लोग उनके साथ एकत्रित होकर उनके अधिकार का समर्थन किये होते। अतएव गृह–युद्ध रोकने के लिए साम्राज्य को विभक्त कर देना अनिवार्य था। परिस्थितियों का ध्यान रख कर हुमायूं ने अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने पिता का साम्राज्य अपने भाइयों में बांट दिया। उसने काबुल तथा बदख्शां–कामरान को, सम्भल अस्करी को और अलवर हिन्दाल को दे दिया। साम्राज्य का शेष भाग हुमायूं ने अपने हाथ में रखा। यद्यपि हुमायूं ने अपने पिता के साम्राज्यों को अपने भाइयों में बांट दिया परन्तु सिद्धान्ततः वह अपने पिता के सिंहासन का उत्तराधिकारी बना रहा और उसकी प्रभुत्व–शक्ति अवभिक्त बनी रही। कामरान जो बड़ा ही महत्वाकांक्षी था इस व्यवस्था से सुन्तुष्ट न हुआ और अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिऐ योजनाएं बनाने लगा।

❑❑

पति पत्नी के पारस्परिक कर्तव्य

- अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी

रिश्तेदारों में सब से क़रीबी रिश्ता माँ बाप का होता है फिर औलाद का, यह रिश्ते क़ुदरती (प्राकृतिक) हैं इन के होने में अपना इख़्तियार नहीं और होजाने के पश्चात इनकी समाप्ति नहीं अल्लाह तआ़ला इन रिश्तों के क़द्र करने और इन के हुक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ से नवाज़े। रिश्तों में तीसरा नम्बर मियां बीवी (पति, पत्नी) का है। मियां बीवी अगर अपने हुक़ूक़ की अदायगी करें अर्थात पति पत्नी अपने अपने कर्तव्यों का पालन करें तो घर का सुख दो गुना हो जाए, साथ ही समाज भी सुखमयी बन जाए।

पहली बात यह है कि इस्लाम से पहले जो धर्म (मज़हब) थे उन सब में पति पत्नी सम्बन्ध को आत्मिक तथा नैतिक (रूहानी व अख़्लाकी) उन्नति में बाधा माना गया था। भारत में बौध, जैन, वैदान्त, योग्य तथा साधू पन के समर्थकों का यही मत था। ईसाई धर्म में तो आत्मिक कौशल प्राप्ति के लिये ब्रह्मचर्य जीवन आज भी अनिवार्य है। इस्लाम ने इस धारणा को मिथ्या घोषित किया और बताया कि आत्मिक तथा नैतिक उन्नति बीवी के साथ रह कर अत्यधिक हो सकती है। वास्तव में अख़लाक नाम है भले व्यवहार का परन्तु जिस नारी का कोई पति न होगा, जिस पुरुष की कोई स्त्री (पत्नी) न होगी जो किसी का न बाप होगा न भाई, जो स्त्री न किसी की बहन होगी। जब किसी से रिश्ता नाता ही न होगा तो मनुष्य अपने भले व्यवहार कहां करके नैतिकता में उन्नति प्राप्त करेगा? अपनी नैतिकता को कुशल बनाने के लिये उस को प्राकृतिक अवसर कहां प्राप्त होंगे? फिर इस संसार में सतीत्व तथा संयम की मौत जिस को नैतिक शरीर का प्राण कहा जाता है, ब्रह्मचर्य जीवन में कहां तक निश्चित है? धार्मिक ब्रह्मचर्य का सम्पूर्ण इतिहास जो संसार के पुस्तकालयों में सुरिक्षीत है इस पर साक्षी है।

इस्लाम ने निकाह को हर आयु के पुरुष तथा स्त्री के लिये ख़ैर व बरकत का सबब बताया है, आदेश है :–

और अपनो में से जो बेनिकाह हों (औ़रत या मर्द) उनका और ग़ुलाम और लौन्डियों में नेकों (सदाचारियों) का निकाह़ (विवाह) कर दिया करो, अगर वह ग़रीब होंगे तो अल्लाह उनको अपनी कृपा से ग़नी (धनवान) कर देगा अल्लाह विशाल, सर्वज्ञानी है। (24:32)

इस आयत की यह बात कि "अगर वह गरीब होंगे तो अल्लाह उन को अपनी मेहरबानी से ग़नी (धनवान) कर देगा। इसमें यह संकेत है कि गृहस्थ जीवन समृद्धि तथा भलाई का साधन है, धार्मिक दृष्टि से तो इस प्रकार कि यदि एक के भाग्य में निधर्नता लिखी होगी तो सम्भव है दूसरा समृद्धि भाग्य वाला हो तो एक को दूसरे से लाभ पहुंचे गा तथा सांसारिक दृष्टि से देखें तो एक के स्थान पर दो कार्यवाहक हो गये, फिर विवाह द्वारा भविष्य में सन्तान आए गी और कार्यकरता बढ़ते जाएंगे परन्तु इस भेद को धनवान न समझ पाएगा निर्धन ही समझेगा, विशेषकर श्रमिक तथा कृषक फिर कैसा ही आलसी हो जब मनुष्य पर बोझ पड़ता है तो वह उसे संभालने के लिये हाथ पांव मारने लगता है इस लिये जो आलस्य से दरिद्र है वह पत्नी के बोझ से श्रम तथा उद्योग पर विवश होगा और अपने लिये कार्य ढून्ढ निकालेगा, पत्नी का प्रेम और उस की चिन्ता उस ऐसे कार्यो पर उद्यत कर देगी जिस के लिये वह पत्नी की मादकता के बिना उद्यत नहीं हो सकता था। आयत के अन्त में बताया गया कि अल्लाह विशाल है उस की विशालता में सब कुछ है वह सर्वज्ञानी परोक्ष ज्ञानी

नीतिज्ञ है अतः उस का यह निकाह का आदेश नीति रहित नहीं।

फिर इस कार्य को यहां तक आवश्यक बताया कि यदि कोई निर्धन मुसलमान किसी शरीफ़ खातून का ख़र्च न उठा सकता हो तो किसी मुसलमान बान्दी ही से निकाह कर ले, क़ुर्आन में है, "और जो तुम में से इसकी क़ुदरत (सामर्थ्य) न रखता हो कि शरीफ़ मोमिन औरतों से निकाह कर सके तो तुम्हारी उन मोमिन बान्दियों में से किसी से निकाह कर ले जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। और अल्लाह तुम्हारा ईमान ज़ियादा जानता है तुम एक दूसरे के हम जिंस हो।" (4:25)

अब चूंकि बान्दियां संसार में नहीं हैं अतः इस विषय पर कुछ और नहीं लिखना है परन्तु इस से निकाह का महत्व अवयश्य स्पष्ट होता है इस की पुष्टि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस कथन से और हो जाती है कि:

मैं तो औरतों से निकाह करता हूँ, जो मेरी पद्धति सो विमुख हुआ वह मुझ से अलग हुआ।

(बुख़ारी–किताबुन्निकाह)

निकाह का उद्देश्य केवल एक आदेश का पालन ही नहीं अपितु हर मनुष्य को अपने एक जीवन साथी की आवश्यकता होती है यह अल्लाह की बनाई हुई प्रकृति है, क़ुर्आन कहता है :–

"और उस की निशानियों में से एक यह है कि उस ने तुम्हारी जिंस से तुम्हारी पत्नियां पैदा कीं ताकि तुम उन के पास सुकून (शान्ति) पाओ और तुम में पारसपरिक प्रेम पैदा कर दिया निःसन्देह इस में सोच विचार करने वाले के लिये कितनी निशानियां हैं।" (रूम :21)

पवित्र क़ुर्आन ने एक शब्द सुकून (शान्ति) से पत्नी की रिफ़ाक़त (साहचर्य) की जिस वास्तविकता को प्रकट किया है वह इस दम्पद सम्बन्ध (इज़दवाजी तअ़ल्लुकात) के सम्पूर्ण दर्शन शास्त्र (फ़लसफ़े) को अपने अंदर समेटे हुए है। उस का एकान्त स्थान, सांसारिक खींचतानी तथा उस की उथल पुथल और उस की समस्याओं के आवेग में शान्ति, विश्राम तथा सुख का घर है। अतः पति पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों में रुचिकरता होनी चाहिये कि उस से इस सम्बन्ध के वह विशेष उद्देश्य जिन के लिये अल्लाह ने इस को उस विशेष सम्बन्ध को अपने आश्चर्यजनक सामर्थ्य के चिन्हों में से बताया है। वह उद्देश्य पूरे हों। अर्थात यदि पति पत्नी में पारस्परिक निःस्वार्थता, प्रेम, स्नेह, अनुकंपा, आत्म संतोष तथा चैन का अभाव हो तो इस में दोनों या दोनों में से एक दोषी हैं।

पति पत्नी की पारस्परिक मैत्री तथा मेल जोल का इस्लाम में इतना महत्व है कि उन लोगों की कठोर निन्दा की गई है जो दंपद सम्बन्धों तथा उन के प्रेम स्नेह में वियोग उत्पन्न करें, कुर्आन में आया है :–

"तो यह (यहूद) उन से (हारुत व मारूत से) वह सीखते हैं जिस से पति पत्नी में फूट डालें" (2:102) यह अनुवाद आयत का एक टुकड़ा है आयत के अन्त में है "ऐसे फूट डालने वाले के लिये आख़िरत के पुरस्कारों में से कुछ नहीं है अपितु उन का बुरा ठिकाना है।

पति पत्नी में पारस्परिक मेल जोल किस प्रकार स्थापित हो सकता है? इस का केवल एक मार्ग है वह यह कि पत्नी, पति की आज्ञाकारिणी हो तथा पति, पत्नी की सान्तवना करे, यद्यपि दम्पति के अधिकार एक दूसरे पर समान हैं परन्तु पति का पद कुछ बढ़ा हुआ है कारण यह कि वह पत्नी की देख भाल भी करता है तथा उस के व्यय का बोझ भी उठाता है, फिर पुरुष में समस्याओं से निमटने की क्षमता तथा स्त्रियों की सुरक्षा की योग्यता कुछ अधिक होती है। कुर्आन कहता है :–

"पुरुष स्त्रियों के रक्षक हैं, इस लिये कि अल्लाह ने एक को एक पर उच्चता दी है तथा इस लिये कि पुरुष अपना धन उन पर व्यय करते हैं तो जो सदाचारिर्णयां हैं वह आज्ञाकारिणी होती है वह गुप्त बातों की रक्षा करती हैं कि अल्लाह ने उन की रक्षा की है। (4:34)

शेष पृष्ठ 38

अल–बैरूनी

(973 ई0–1048ई0)

– मुहम्मद इलियास हुसैन

विश्व प्रसिद्ध विद्वान और महान वैज्ञानिक अल–बैरूनी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। खगोलशास्त्र, गणित, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान, चिकित्साशास्त्र, भूगोल और दर्शनशास्त्र के क्षेत्रों में उनका बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने गहन अध्ययन और कठोर परिश्रम के बल पर प्रायः इन सभी विषयों को विकास के उच्च शिखर पर पहुंचाने का सफल प्रयास किया। उनके योगदान के कारण दुनिया आज भी उन्हें याद करती है।

अल–बैरूनी का जन्म ईरान के ख़्वारिज़्म शहर के निकट 'कास' नामक गांव में एक सामान्य परिवार में 4 दिसम्बर, 973 ई0 में हुआ था। अल–बैरूनी का पूरा नाम 'बुरहानुल–हक़ अबुल–रैहान मुहम्मद बिन–अहमद अल–बैरूनी' था। ख़्वारिज़्म उस समय ज्ञान–विज्ञान का महत्वपूर्ण केन्द्र था। उसकी प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैली हुई थी। वहां अनेक देशों से छात्र ज्ञान प्राप्त करने आते थे।

ख़्वारिज़्म के निवासी बाहर से आने वाले लोगों को 'अल–बैरूनी' (बाहर का रहने वाला) कहते थे। 'अबू–रैहान' भी चूंकि ज्ञान प्राप्त करने के लिए बाहर से वहां आये थे, इसलिए उन्हें भी 'अल–बैरूनी' के नाम से पुकारा गया। लेकिन उन्होंने अनेक वैज्ञानिक विषयों में दक्षता प्राप्त की तथा इतना अधिक अनुसंधान– कार्य किये कि उनका यश दूर–दूर तक फैल गया। अतः इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। अब जब भी 'अल–बैरूनी' का नाम आता है, तो उससे 'अबू–रैहान' ही का व्यक्तित्व अभीष्ट होता है।

अल–बैरूनी को बचपन से ही ज्ञान प्राप्त करने का बहुत शौक़ था। वैज्ञानिक विषयों पर किताबें पढ़ने, लिखने, नवीनतम ज़ानकारी हासिल करने और उन पर शोध करने में ही उनका अधिकतर समय बीतता था। वे हमेशा वैज्ञानिक तथ्यों की खोज में लगे रहते थे। वे कहा करते थे, "मनुष्य का मान–सम्मान उसके व्यक्तिगत गुणों और कार्यों में निहित होता है, उच्च कुल में जन्म लेने से कोई उच्च और बड़ा नहीं हो जाता।"

अल–बैरूनी को अनेक विद्या–प्रेमी बादशाहों शासकों और लोगों का संरक्षण तथा सहयोग प्राप्त था। वे ख़्वारिज़्म के बादशाह मुहम्मद बिन अहमद के चचेरे भाई मंसूर इब्ने–अली बिन–इराक के शिष्य थे। उनके गुरु मंसूर बहुत बड़े विद्वान थे। मंसूर को गणित और विज्ञान से अत्यन्त गहरा लगाव था। उन्होंने ही पहली बार त्रिकोणमिति की परिकल्पना प्रस्तुत की थी।

गुरु और शिष्य ने एक साथ मिलकर गणित और विज्ञान के विविध विष्यों पर एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से कई पुस्तकें विश्व के अनेक पुस्तकालयों में आज भी मौजूद हैं।

कालान्तर में ख़्वारिज़्म राजनीतिक उथल–पुथल का शिकार हो गया और उस पर महमूद ग़ज़नबी का अधिकार हो गया। महमूद ग़ज़नवी ने अल–बैरूनी को भरपूर सम्मान दिया। वे महमूद के साथ ग़ज़नी चले गये। ग़ज़नी में महमूद ने उनके लिए एक वेधशाला बनवा दी, जिसके माध्यम से वे आकाशीय पिण्डों और नक्षत्रों का अध्ययन किया करते थे।

महमूद ग़ज़नवी के साथ अल–बैरूनी भी भारत आये। उन्होंने यहां के विद्वानों से संस्कृत भाषा और भारतीय धर्म, दर्शन, ज्योतिष इत्यादि का ज्ञान प्राप्त किया। इसी तरह भारतीय विद्वानों ने भी उनसे बहुत कुछ सीखा। भारतीय विद्वान उनसे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें 'ज्ञान–सागर' की उपाधि से अलंकृत किया। अल–बैरूनी ने यहां के रीति–रिवाजों और रहन–सहन का गहन अध्ययन किया और ग़ज़नी

वापस जाकर अरबी भाषा में 'किताबुल–हिन्द' नाम की पुस्तक लिखी, जिसमें यहां के बारे में विविध रोचक और ज्ञानवर्द्धक जानकारियां एकत्रित कर दीं। यह किताब आज भी विश्व की अनेक भाषाओं में उपलब्ध है। आजकल यह पुस्तक 'अल–बैरूनी का भारत' के नाम से भी उपलब्ध है। तत्कालीन भारतीय समाज और धर्म के सम्बन्ध में विविध महत्वपूर्ण जानकारियां इससे मिलती हैं। दूसरे ऐतिहासिक जानकारी का मुख्य स्रोत 'किताबुल–हिन्द' को ही माना जाता है।

अल–बैरूनी ने अपनी विश्व प्रसिद्ध 'अल–आसारुल–बाकिया' में अपनी 114 पुस्तकों का उल्लेख किया है। 'अल–आसारुल–बाकिया' के बाद भी उन्होंने लगभग एक दर्जन पुस्तकें लिखीं। खगोलशास्त्र पर उन्होंने 'अल–किताबुल–मसऊदी' नामक पुस्तक लिखी, जो आज भी इस विषय पर उत्कृष्ट पुस्तक मानी जाती है।

ज्ञान–विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में अल–बैरूनी के कार्य का ऐतिहासिक महत्व है। उन्होंने सर्वप्रथम यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। उन्होंने अक्षांश और देशान्तर रेखाओं को मालूम करने तथा समुद्र की गहराई को मापने की विधि ज्ञात की और अनगिनत जड़ी–बूटियों के औषधीय गुणों और विभिन्न भाषाओं में उनके नामों का उल्लेख किया। वैज्ञानिक शोधों के द्वारा खनिज–पदार्थ–सम्बन्धी ज्ञान के क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक नये अध्याय जोड़े। अल–बैरूनी पहले वैज्ञानिक हैं जिन्होंने कहा कि सिन्धु घाटी पहले किसी प्राचीन समुद्र की खाड़ी थी, जो धीरे–धीरे मिट्टी से भर गयी। आधुनिक भूगर्भशास्त्री भी अपने शोधों के आधार पर इस तथ्य को सही ठहराते हैं। संसार के बड़े–बड़े मरुस्थलों के बारे में भी अल–बैरूनी ने कहा है कि वे किसी काल में समुद्रों की खाड़ियां थीं विश्व प्रसिद्ध अर्यटक और महान वैज्ञानिक अल–बैरूनी अपने जीवन के अन्तिम काल में ख़्वारिज़्म लौट गये थे। और वहीं उनकी पार्थिव जीवन–यात्रा सन् 1048 ई0 में समाप्त हो गयी। लेकिन उन्होंने ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जिन यात्राओं का शुभारम्भ किया वे आज भी जारी हैं। जब तक ज्ञान–विज्ञान की यह यात्रा जारी रहेगी तब तक अल–बैरूनी को उनके योगदान के कारण याद किया जाता रहेगा।

अल–बैरूनी ने अपना सारा जीवन वैज्ञानिक अनुसंधान करने, ज्ञान प्राप्त करने और पुस्तकें लिखने में गुजार दिया। ज्ञान प्राप्त करना और उस ज्ञान का सम्बन्धित क्षेत्र में उपयोग करना उनके जीवन का लक्ष्य था। आज भी उनकी पुस्तकें ज्ञान का स्रोत हैं। वे प्रायः कहा करते थे, "अल्लाह ज्ञानी है और अज्ञान उसे पसन्द नहीं।"

अल्लाह के इन बन्दों की बात और है, जिन्हें उसने चुन लिया।

(कुरआन, 37:160)

❑❑

पति पत्नी के पारस्परिक.....

आयत के अन्त का भाग बताता है कि सदाचारणियां पति की अनुपस्थिति में अपनी तथा पति के मान मर्यादा और धन सम्पति का ध्यान रखती हैं कि उन की यही प्रकृति है अल्लाह ने बनाई है। अल्लाह तआला ने उन में अपने सतीत्व का ध्यान तथा पति भक्ति का प्राकृतिक भाव उत्पन्न कर के उन को सुरक्षित कर दिया अब यदि किसी स्त्री में उस के विरुद्ध भावना पाई जाए तो यह उस की प्रकृति के विरुद्ध है।

पुरुष व स्त्री को निकाह द्वारा मिला कर अल्लाह तआला ने दोनों की काम इच्छा को उन आर्थिक तथा सामाजिक कमी की पूर्ति का साधन बनाया अतः यह एक दूसरे के लिए अनिवार्य, एक दूसरे की त्रुटियों के आवरण एक दूसरे के श्रंगार, तथा एक दूसरे के पूरक हैं पवित्र कुर्आन की विशेषता देखिये इन समस्त अर्थो को एक उपमा में कह दिया है :–

अनुवाद : स्त्रियां तुम्हारे वस्त्र हैं तथा तुम उन के वस्त्रा हो।"

इस वस्त्र के पीछे जैसा अभी कहा गया बीसों अर्थ छुपे हुए हैं, तुम उन के आवरण हो वह तुम्हारे तुम उनके श्रंगार हो वह तुम्हारे, तुम उन की सुन्दरता हो वह तुम्हारी तुम उन के पूरक हो वह तुम्हारी, यही निकाह के उद्देश्य हैं, इन ही उद्देश्यों की पूर्ति दम्पत अधिकारों की चुकौती है।

जारी.....

❑❑

किस्त 12

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चापलूसी	चाटुकारिता	चप व रास्त	दायां बायां	चशमक	द्वेष
चारपाया	पशु	चपरासी	सेवक	चश्मनुमाई	चेतावनी
चार दांग	चतुर्दिश	चपकलिश	असमंजस	चशमां	उदगम
चारसू	चतुर्दिश	चिराग़	दीप	चुग़लखोर	विशुन
चारह	उपचार	चिराग़दान	दीप स्तंभ	चुगलखोरी	पिशुनता
चाराजूई	उपचारयाचना	चिरागे़ राह	मार्गदीप	चुगली	गुप्त निन्दा
चार-ए-कार	उपाय	चिरागां	दीपावली	चमक	प्रकाश
चारा गार	उपचारक	चरा गाह	चर भूमि	चमकदार	दीप्तिमान
चार व नाचार	विवश होकर	चर्बेजबां	वाकपट	चमन	उद्यान
चाश्त	पहर दिन चढ़े	चर्बा	प्रतिरूप	चुनांचि	अतएव
चाक	विदीर्ण	चर्बी	वसा	चन्द	कुछ
चाकर	सेवक	चर्ख	आकाश	चन्दा	अनुदान
चाकरी	सेवा	चरिन्दा	पशु	चुंगी	सीमाशुल्क
चालाक	चतुर	चुस्त	पटु	चोब	काष्ठ
चान्द	चन्द्रमा	चुस्ती	पटता	चोबदार	प्रतिहार
चान्दनी	कौमुदी	चश्म	नेत्र	चौपाया	चतुष्पद
चान्द मासी	लक्ष्य भेदन	चश्मेबसीरत	अंतर्चक्षु	चौगोशा	चतुष्कोण
चान्दी	रजत	चश्मपोशी	अन्देखी	चहारदीवारी	प्राचीर
चाह	इच्छा	चश्मेदीद	प्रत्यक्षदर्शी	चहारुम	चतुर्थ
चप	बायां	चश्मजदन = निमेषु, पलक झपकते		चेहरा	मुखड़ा

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

पाक को 65 अरब का नुकसान लगा रहा तालिबान

इस्लामाबाद! तालिबान पाक सरकार को आर्थिक चोट भी पहंचा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक हर साल अवैध रूप से संगमरमर, रत्न और इमारती लकड़ी बेचकर वह सरकार को 65 अरब रुपयों का चूना लगा रहा है। तालिबान ने अप्रैल 2008 में संगमरमर के कारोबार पर कब्जा जमाया, जिससे सरकार को 2013 तक 50 करोड़ अमेरिकी डॉलर के मुनाफे की उम्मीद थी। असके बाद तालिबान ने पन्ना के कारोबार पर कब्जा किया।

मुम्बई ट्रेन विस्फोटों का आरोपित सादिक शेख बरी

मुंबई! विशेष मकोका अदालत ने मुम्बई ट्रेन विस्फोटों के आरोपित और इंडियन मुजाहिदीन के कथित संस्थापक सदस्य मोहम्मद सादिक शेख को आरोपमुक्त कर दिया। उस पर 11 जुलाई 2006 को मुंबई की लोकल ट्रेन में विस्फोट करने का आरोप था। संयुक्त पुलिस आयुक्त राकेश मारिया ने सादिक सहित आईएम के अन्य सदस्यों को गिरफ्तार करने के बाद कहा था कि बम की योजना बनाने वालों की गुत्थी सुलझा ली गई है। लेकिन एटीएस सादिक के खिलाफ कोई सबूत नहीं जुटा पाई। एटीएस ने मकोका कोर्ट को अर्जी देकर कहा कि सादिक के खिलाफ लोकल ट्रेन धमाके में कोई सबूत नहीं मिला है इसलिए उसे इस मामले से बरी कर दिया जाए।

अमरीका ने हमले रोकने की मांग ठुकराई

वाशिंगट! अमरीका ने अफानिस्तान में हवाई हमले बंद करने के वहां के राष्ट्रपति हामिद करजई के अनुरोध को खारिज करते हुए कहा है कि ये हमले बदस्तूर जारी रहेंगे। अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहाकार सवानिवृत जनरल जेम्स जोन्स ने दो टूक शब्दों में कहा है कि अफगानिस्तान पर जारी हवाई हम्ले नहीं रूकेंगे। ज्ञातव्य है कि कुछ समय पहले ही अफगानिस्तान के राष्ट्रपति हामिद करजई ने कहा था कि देश के फराह प्रांत में अमरीकी बमबारी और हवाई हमले में 130 आम नागरिक मारे गये थे।

फ्रांस व सउदी अरब में असैन्य परमाणु समझौता जल्द

रियाध! फ्रांस और सउदी अरब ने असैन्य परमाणु ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सार्थक पहल की घोषणा करते हुए जल्द ही इससे जुडे समझौते पर हस्ताक्षर करने की बात कही है। फ्रांस के वित्त मंत्री क्रिस्टीन लेगार्डे ने सऊदी अरब के शाह अब्दुल्ला, तेल मंत्री अली अल नैमी और वित्त मंत्री इब्राहीम अल असफ से मुलाकात के बाद एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि बात चीत में काफी सकारत्मक प्रगति हुई है। और मैं अशा करता हूं कि जल्द ही दोनों देशों के राष्ट्रध्यक्ष समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे।

कोर्ट की तौहीन पर जज ने अजमल कसाब को डांटा

मुम्बई! अदालत में उस समय सन्नाटा छा गया, जब विशेष न्यायाधीश ने पाकिस्तानी आतंकवादी अजमल आमिर कसाब को जमकर डांटा। न्यायाधीश एमएल तहिलियानी ने कसाब को चेताया कि वह अदालत में तमीज से रहे और अदालती कार्रवाई को गंभरीता से ले। दरअसल, मुम्बई में आतंकी हमले के पहले चश्मदीद गवाह पुलिस सबइंस्पेक्टर भास्कर कदम जब आतंकियों के जब्त हथियारों और सामानों की शिनाख्त कर रहे थे, तब कसाब अपनी हंसी से न सिर्फ अदालत की तौहीन कर रहा था बल्कि लग रहा था मानो वह चश्मदीद गवाह को भी झूठा बता रहा हो और सारी कार्रवाई का मजाक उड़ा रहा हो। वैसे अदालत में जब वह आरोपित के कठघरे में बैठा तभी से लगातार हंस रहा था। अदालत के सामने रखे हथियारों और सामानों की पहचान गवाह कदम ने की। उन्होंने बताया कि दो हथियार कसाब और उसके साथी इस्माइल ने आतंकी हमले में इस्तेमाल किए थे। इस्माइल गिरगांव चौपाटी पर पुलिस मुठभेड में मारा गया था। लेकिन कसाब को पुलिस ने जिंदा पकड़ लिया था।

❑❑